www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सचित्र बाल कथाएँ

कल्याण पथ

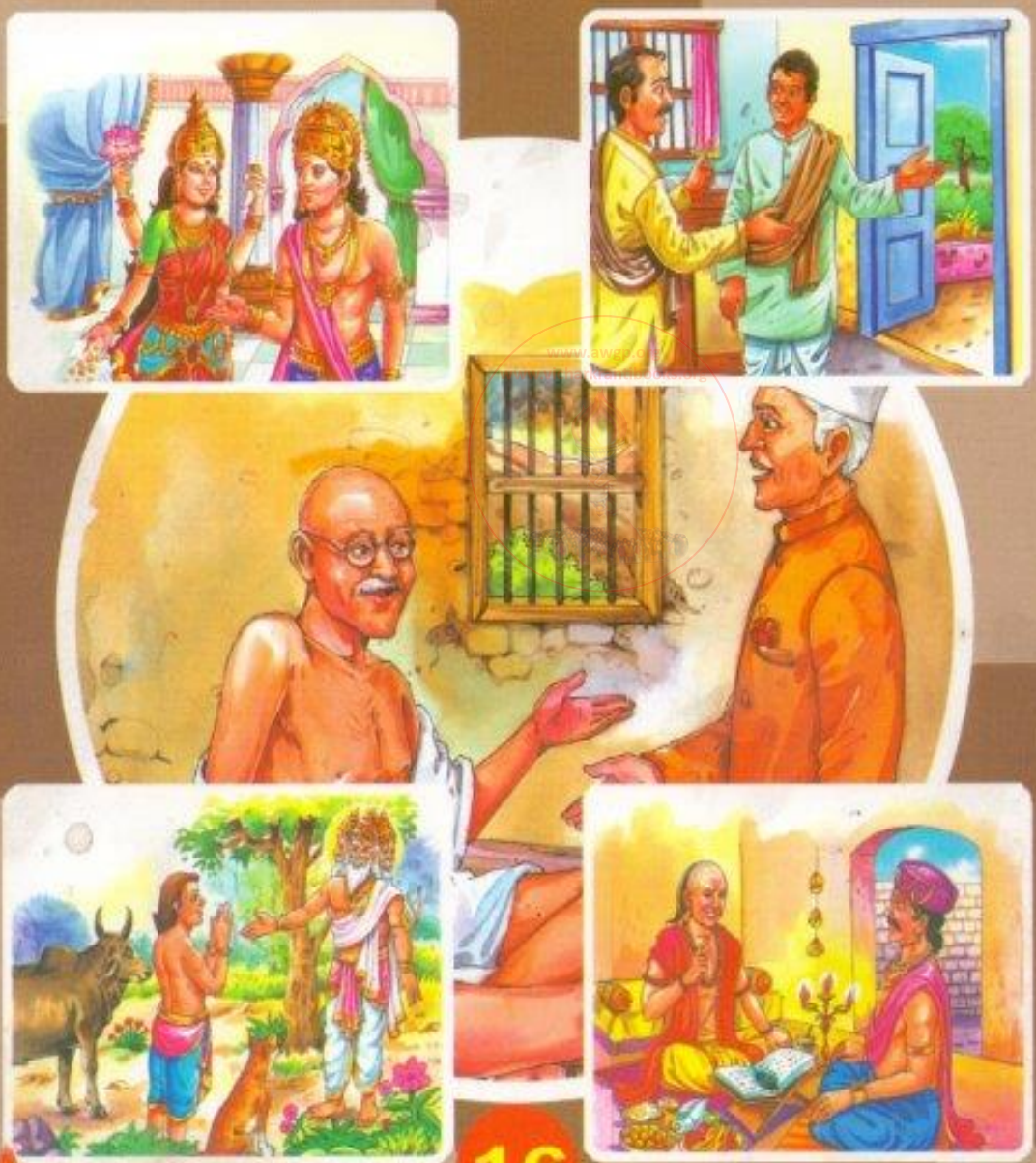

16

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर्त्तव्यपालन का पुरस्कार

बादशाह अब्बास अपने एक पदाधिकारी के यहाँ दावत में गए। वहाँ उन्होंने और उनके सब साथियों ने इतनी मदिरा पी ली कि किसी को होश नहीं रहा। नशे की झोंक में बादशाह खड़ा हो गया और उसी पदाधिकारी के अंत:पुर की ओर जहाँ उनकी पत्नियाँ रहती थीं, जाने लगा। पर दरवाजे पर उस पदाधिकारी का नौकर इस प्रकार खड़ा था कि उसे हटाए बिना बादशाह भीतर नहीं घुस सकते थे। उन्होंने नौकर से कहा—"अभी यहाँ से हट जा वरना मैं तलवार से तेरा सिर उड़ा दूँगा।"

नौकर ने सिर झुकाकर कहा—"हजूर मेरे देश के स्वामी हैं, इसलिए मैं आप पर हाथ तो उठा नहीं सकता। पर यह निश्चय है कि आप मेरी लाश पर पैर रखकर ही भीतर जा सकेंगे। पर याद रखिए कि भीतर जाने पर बेगमें तलवार लेकर आपका मुकाबला करेंगी, क्योंकि जब उनकी इज्जत पर हमला किया जाएगा तो वे अपना बचाव जरूर करेंगी।"

बादशाह का नशा सेवक की खरी बातों को सुनकर ठंढा पड़ गया और वे वापस चले गए। दूसरे दिन उस पदाधिकारी ने बादशाह से कहा—"मेरे जिस नौकर ने कल आपके सामने बेअदबी की थी, उसे मैंने दंडस्वरूप अपने यहाँ से निकाल दिया है।"

बादशाह ने कहा—"यह तो बहुत अच्छा हुआ, मैं उसे आपसे माँगकर अपने अंगरक्षकों का सरदार बनाना चाहता था क्योंकि वह नौकर बहुत ही वफादार है। बस अब आप उसे बुलाकर मेरे पास भेज दीजिए।" सच्चे व्यक्ति की कदर सभी जगह होती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुभव का मूल्य

चार विद्यार्थी अपने-अपने विषयों में योग्यता प्राप्त करके साथ-साथ घर वापस लौट रहे थे। चारों को अपनी विद्या पर बहुत गर्व था। रास्ते में पड़ाव डाला और भोजन बनाने का प्रबंध किया। जो तर्कशास्त्र का अध्ययन करके लौटा था, वह आटा लेने बाजार गया। लौटा तो सोचने लगा कि पात्र वरिष्ठ (बड़ा) है या आटा। तथ्य जानने के लिए उसने बरतन को उलटा तो आटा रेत में बिखर गया।

कला में योग्यता प्राप्त कलाशास्त्री लकड़ी काटने गया। सुंदर हरे-भरे वृक्ष पर मुग्ध होकर उसने गीली टहनी को काट लिया। गीली लकड़ी से जैसे-तैसे चूल्हा जला, थोड़ा चावल जो पास में था उसी को बटलोई में किसी प्रकार पकाया जाने लगा। भात पका तो उसमें से 'खुद-बुद' की आवाज होने लगी। तीसरा पाक शास्त्री उसी का ताना-बाना बुन रहा था। चौथे ने उबलने पर उठने वाले 'खुद-बुद' शब्दों को ध्यानपूर्वक

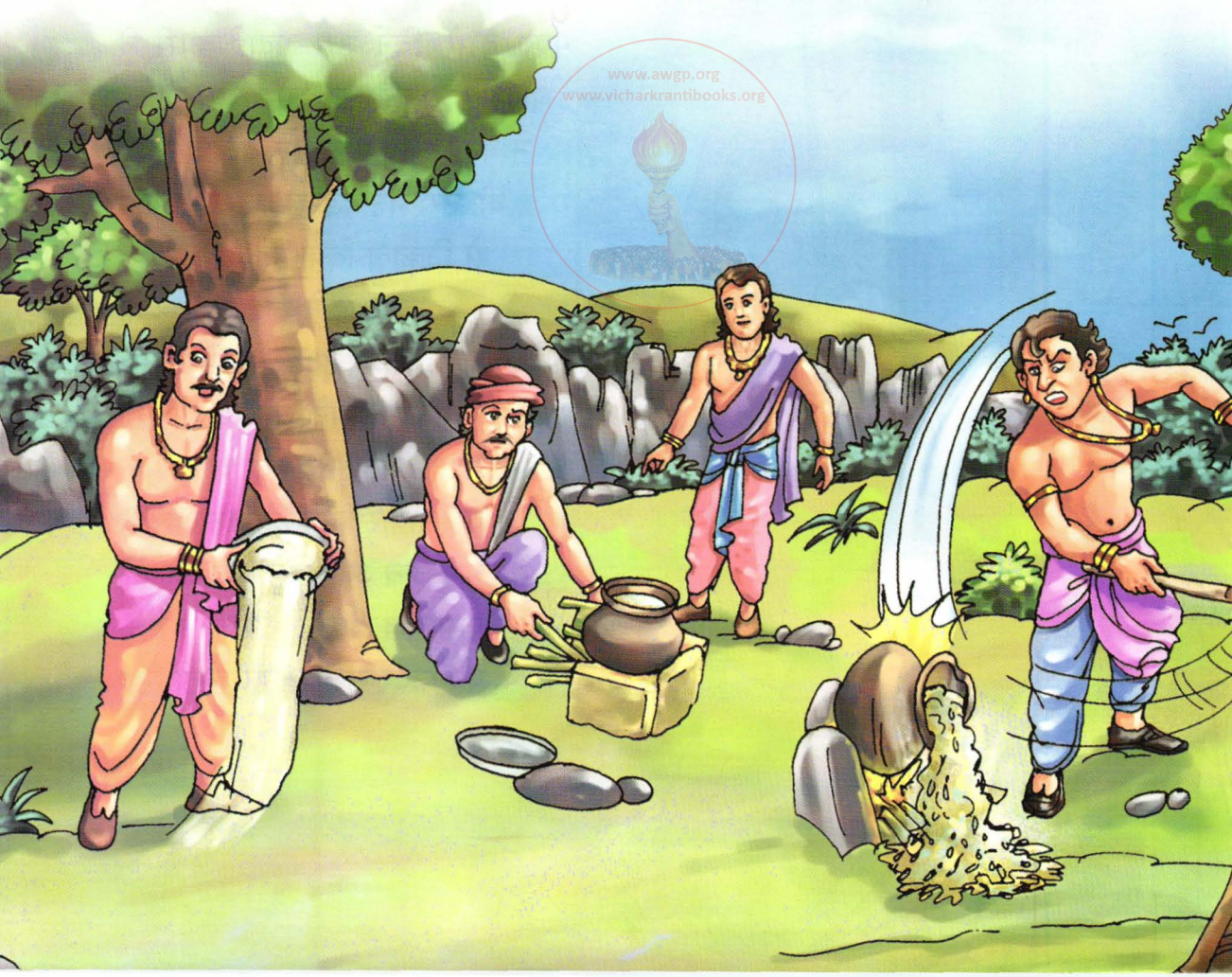

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुना और व्याकरण के हिसाब से इस उच्चारण को गलत बताकर एक डंडा बटलोई पर जड़ दिया। भात चूल्हे में फैल गया।

चारों विद्वान विद्यार्थी भूखे सोने लगे, तो पास में पड़े एक ग्रामीण ने अपनी पोटली में से नमक-सत्तू निकालकर खिलाया और कहा—"पुस्तकीय ज्ञान की तुलना में व्यावहारिक अनुभव का मूल्य अधिक है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हिल-मिलकर परिश्रम करना

एक व्यक्ति एक संत के पास पहुँचा और बोला—"महाराज! मेरी आमदनी कम है, मेरे बच्चे भूखों मरते हैं।" संत ने पूछा—"बाल-बच्चे क्या काम करते हैं?" वह व्यक्ति अकड़कर बोला—"क्या वे किसी के नौकर हैं जो काम करें।" संत ने कहा—"भाई, घर का बोझ उठाने के लिए अपनी-अपनी स्थिति के अनुसार सभी को कुछ न कुछ करना चाहिए। अकेले काम कैसे चलेगा?" आदमी संत के उत्तर को समझ गया कि बच्चों से भी कुछ काम अवश्य कराना चाहिए और वह संतुष्ट होकर चला गया। कुछ दिन बाद फिर आया। इस बार काफी भेंट आदि भी लाया था। संत के चरणों में रखकर बोला—"महाराज! अब एक बच्चा जानवर चराता है, दूसरा खेती करता है। स्त्री भी हाथ बटाती है। किसी तरह की कमी नहीं है।" संत बोले—"जिस घर के सब लोग हिल-मिलकर परिश्रम करते हैं उन्हें कभी तंगी नहीं आती।"

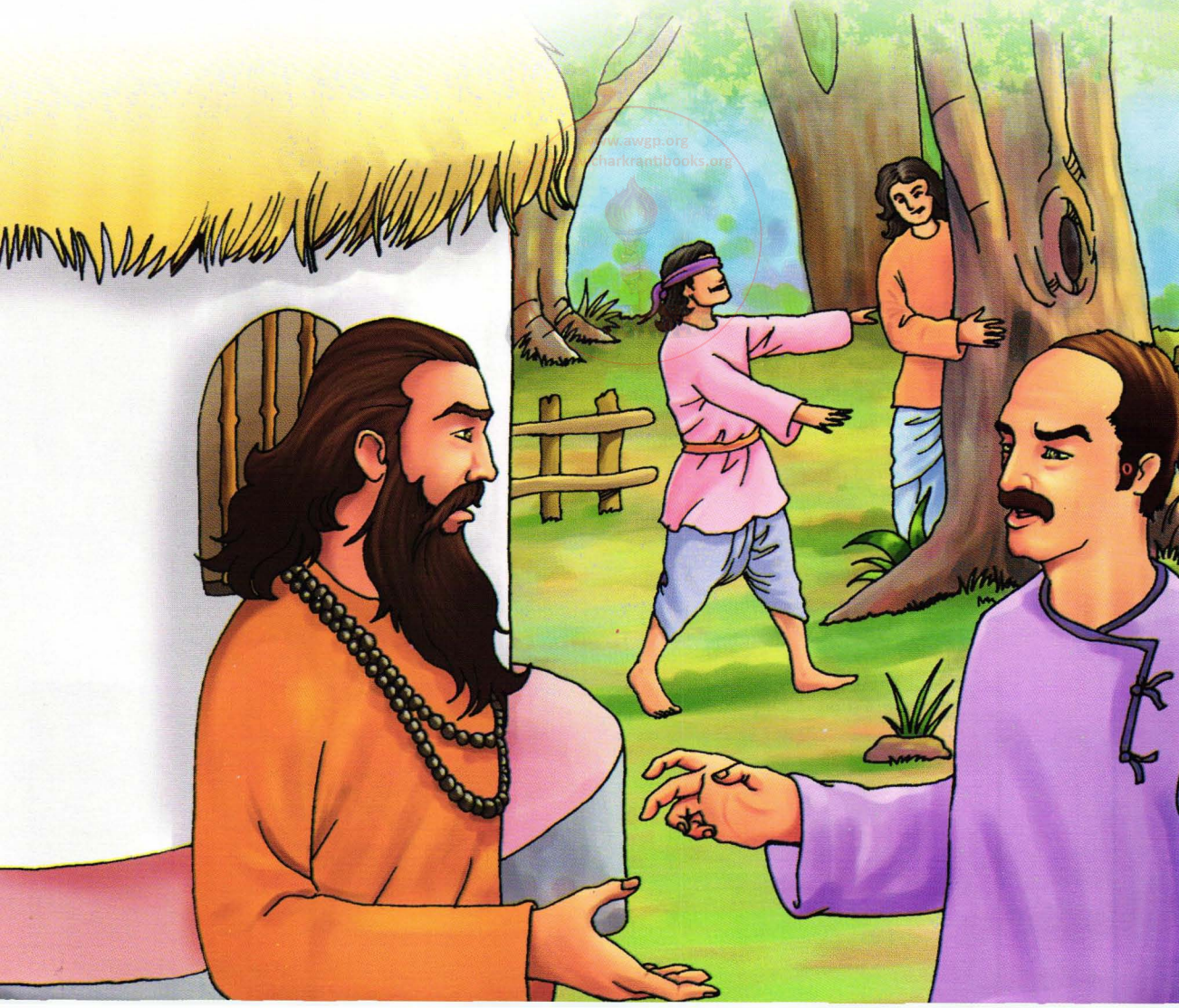

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नास्तिक को शिक्षा

दो मित्र थे, उनमें एक आस्तिक था व दूसरा नास्तिक। आस्तिक के रहन-सहन का स्तर बड़ा सरल व कार्य-व्यवहार बड़ा शिष्ट था। वह था भी आत्म संतोषी, जितना मिल जाता, उसी में संतुष्ट रहता। इसके विपरीत नास्तिक दिन भर इसी उधेड़-बुन में लगा रहता कि अधिकाधिक आर्थिक अर्जन कर किस तरह भौतिक सुख-साधन एकत्रित करे। नास्तिक मित्र ने अपने आस्तिक मित्र से एक दिन पूछा—"तुम्हारा त्याग वास्तव में बहुत बड़ा है, क्या तुमने भगवान की भक्ति में सारी दुनियादारी ही छोड़ दी ?" आस्तिक ने उत्तर दिया—"भाई, तुम्हारा त्याग तो और भी बड़ा है, तुमने तो दुनिया के लिए ईश्वर को ही छोड़ रखा है।" नास्तिक को उस दिन सीख मिली और उसने अपना जीवनक्रम पूरी तरह बदल दिया। अब वह अपने ज्ञान का लाभ दूसरों को देकर उन्हें स्वावलंबी बनाने का शिक्षण देने लगा। साथ ही उसने अपना व्यवहार भी बदला व आचरण भी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रोध हमारा शत्रु

वन-विहार के लिए वासुदेव, बलदेव और सात्यकि अपने घोड़ों पर चढ़कर निकले। रास्ता भटक जाने से वे सघन वन में जा फँसे। उन्होंने रात्रि एक पेड़ के नीचे बिताने का संकल्प किया। घोड़े बाँध दिए गए। तीनों ने एक-एक प्रहर पहरा देने का निश्चय किया, ताकि सुरक्षा होती रहे और दो साथी सोते रह सकें।

पहली पारी सात्यकि की थी। वे जगे, दो सो गए। इतने में पेड़ पर से पिशाच उतरा और लड़ने के लिए ललकारने लगा। सात्यकि ने उसके कटु वचनों का वैसा ही उत्तर दिया और घूँसे का जवाब लात से देते रहे। सात्यकि को कई जगह चोट लगी, पर उस समय साथियों से उस प्रसंग की चर्चा न कर, सो जाना ही उचित समझा।

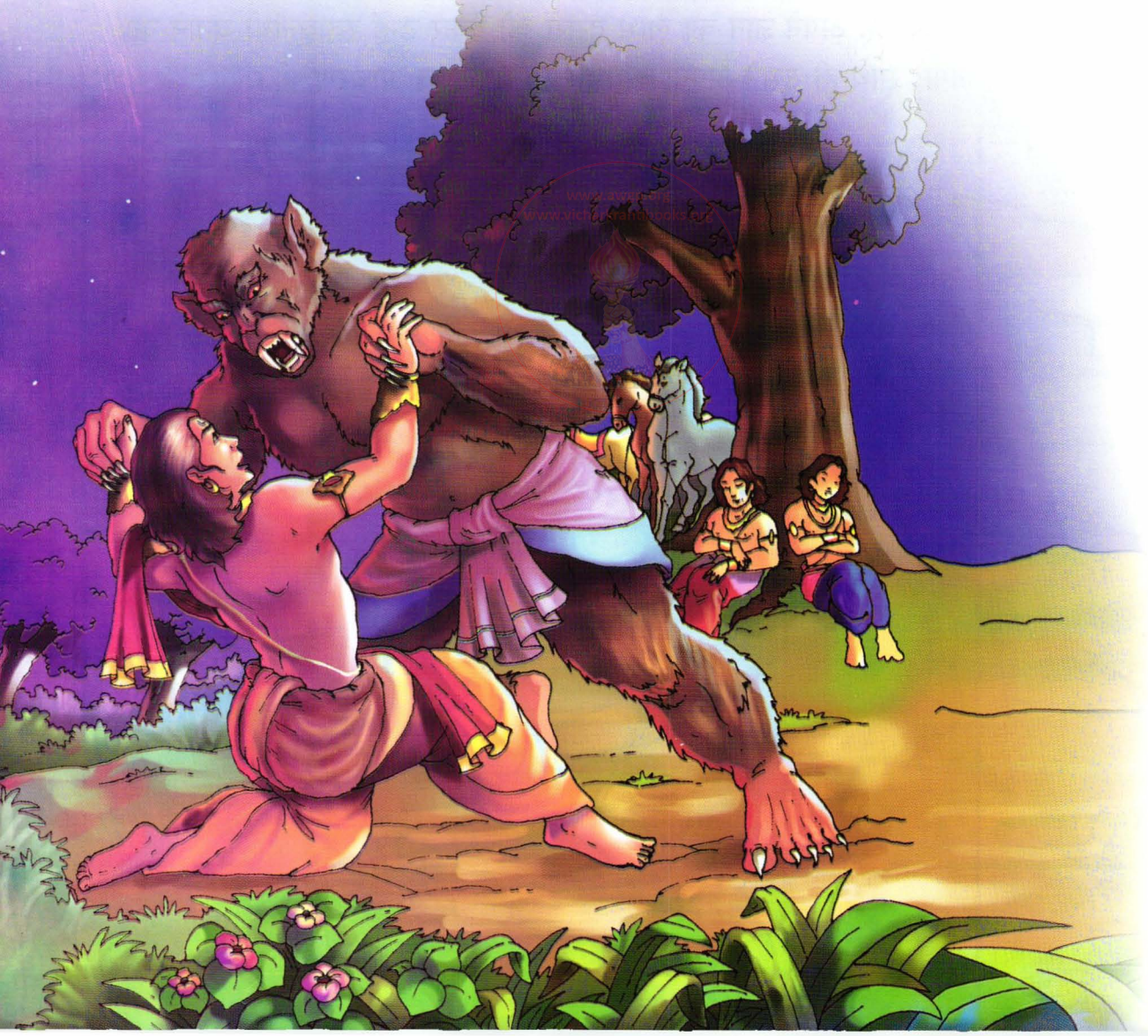

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अब बलदेव के जागने की बारी थी। पिशाच ने उन्हें भी चुनौती दी, जवाब में वैसे ही गरमागरम उत्तर मिले। प्रेत का आकार और बल पहले की तरह बढ़ता रहा और बलदेव की बुरी तरह दुर्गति हुई।

तीसरी पारी वासुदेव की आई। उन्हें भी चुनौती मिली। वे हँसते हुए लड़ते रहे और कहते रहे—"बड़े मजेदार आदमी हो तुम! नींद और आलस्य से बचने के लिए मित्र जैसा मखौल कर रहे हो।"

पिशाच का बल घटता गया और आकार भी छोटा होने लगा। अंत में वह झींगुर जैसा छोटा रह गया। तब वासुदेव ने उसे दुपट्टे के एक छोर में बाँध लिया। प्रातः जब चलने की तैयारी होने लगी, तो सात्यकि और बलदेव ने पिशाच से मल्लयुद्ध होने की घटना सुनाई और चोटों के निशान दिखाए। वासुदेव हँसे और पिशाच को दुपट्टे के छोर में से खोलकर हथेली पर रख लिया। आश्चर्यचकित साथियों को देखकर वासुदेव ने बताया कि यह पिशाच और कोई नहीं कुसंस्कार रूपी क्रोध था, जो वैसा ही प्रत्युत्तर पाने पर बढ़ता और दूना होता है, पर जब उपेक्षा की जाती है, तो दुर्बल और छोटा हो जाता है।

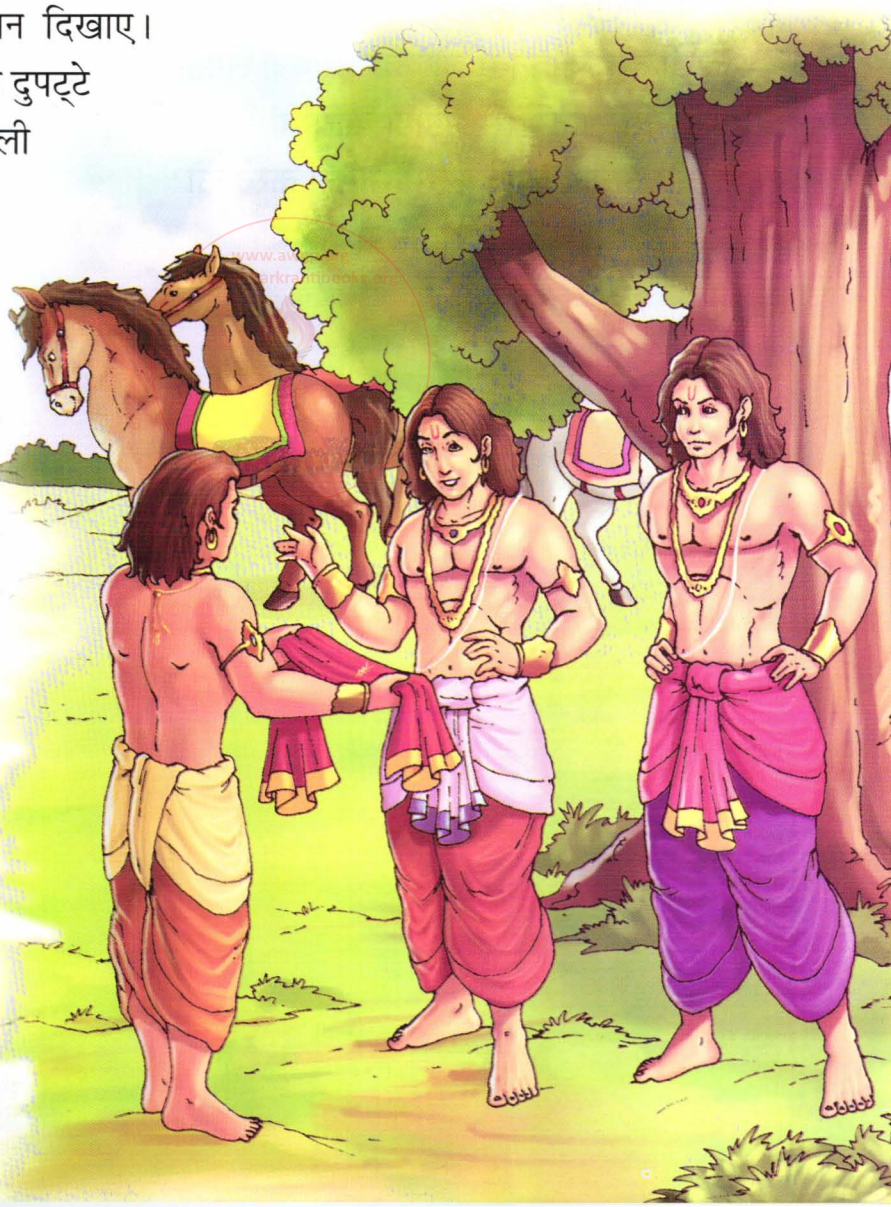

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भागो मत, सामना करो

काशी के बंदर भी बड़े दुष्ट माने जाते हैं। एक बार स्वामी विवेकानंद काशी में किसी जगह जा रहे थे। उस स्थान पर बहुत से बंदर रहते थे जो आने-जाने वालों को बिना बात तंग किया करते थे। एकबार विवेकांनद के साथ भी उन्होंने वही किया। उनका रास्ते से गुजरना बंदरों को अच्छा न लगा, वे चिल्लाकर उनकी ओर दौड़े और पैरों में काटने लगे। बंदरों के हाथ से छुटकारा पाना मुश्किल लगा। तेजी से विवेकानंद भागे पर जितना भागते बंदर भी उतना ही काटने को दौड़ते। तभी एक अपरिचित आदमी की आवाज सुनाई दी— "भागो मत सामना करो।" बस स्वामी विवेकानंद खड़े हो गए और ऐसी जोर की डाँट बंदरों को बताई कि एक घुड़की में ही बंदर भाग खड़े हुए।

इसी तरह जीवन में जो कुछ डरावना लगता है, उसका हमें साहसपूर्वक सामना करना पड़ेगा। परिस्थितियों से भागना कायरता है। कायर पुरुष कभी विजयी नहीं होता। भय, कष्ट और अज्ञान का जब हम सामना करने को तैयार होंगे तभी वे हमारे सामने से भागेंगे।

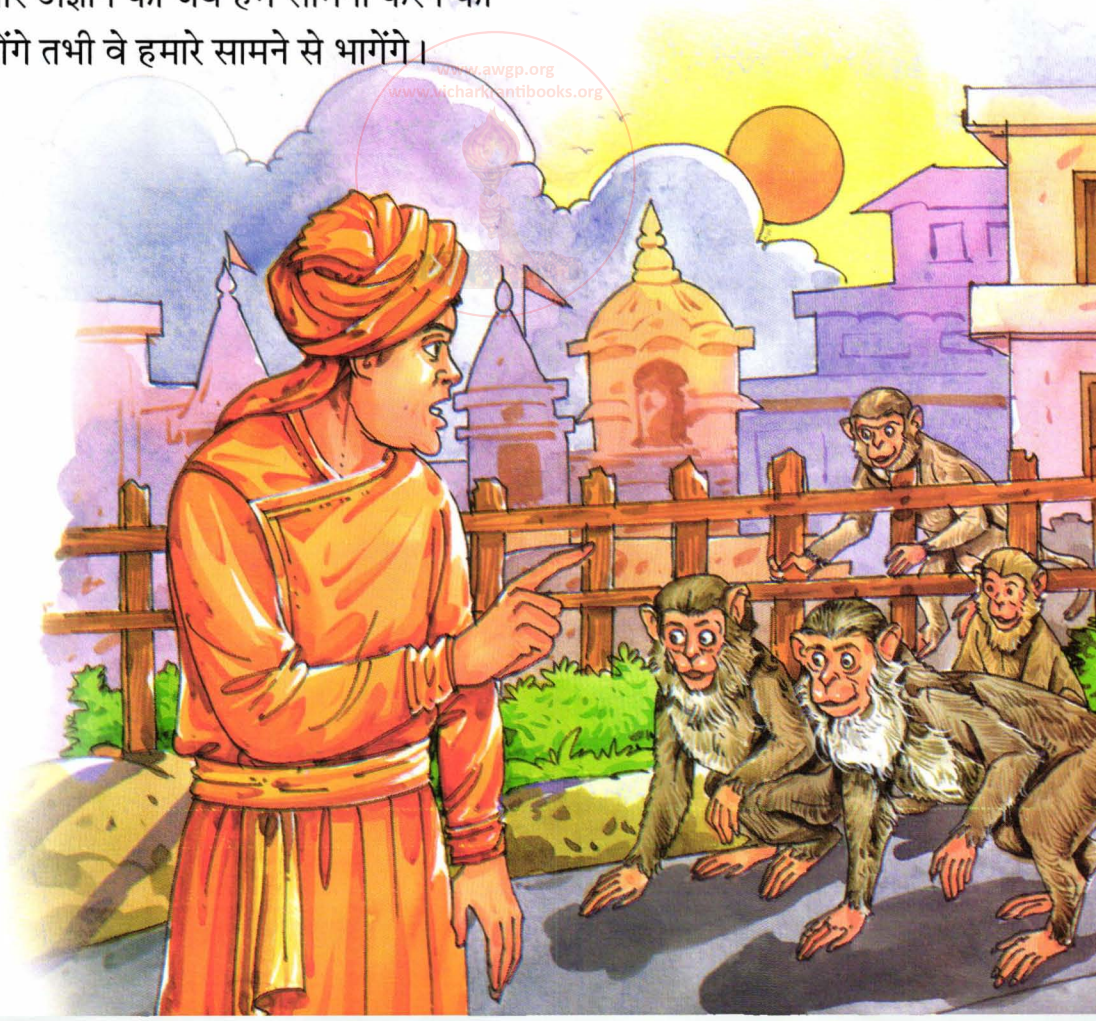

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान का प्यार

शाम हुई मनसुख घर लौटे। आज भगवान कृष्ण गाएँ चराने नहीं गए थे। उनका जन्म दिवसोत्सव था। घर में पूजा थी, यशोदा ने उन्हें घर में ही रोक लिया था।

गोप-बालकों ने पूछा—"मनसुख तुम तो अनन्य भक्त और सखा हो गोपाल के, फिर आज कृष्ण ने तुम्हें प्रसाद के लिए नहीं पूछा। तुम तो कहते थे गोपाल मेरे बिना अन्न का दाना भी मुँह में नहीं डालते।"

"हाँ-हाँ ग्वालो! ऐसा ही है, तुम्हें विश्वास कहाँ होगा। कन्हाई तो आज भी मेरे पास आए थे। आज तो उन्होंने मुझे अपने हाथ से ही खिलाया था।""यह झूठ है" यह कहकर गोप-बालक कृष्ण को पकड़ लाए और कहने लगे—"लो मनसुख! अब तो कृष्ण सामने खड़े हैं, पूछ ले इन्होंने तो आज देहलीज के बाहर पाँव तक नहीं रखा।" कृष्ण ने गोप-बालकों का समर्थन किया और कहा—"हाँ-हाँ मनसुख! तुम्हें भ्रम हुआ होगा मैं तो आज बाहर निकला तक नहीं।"

मनसुख ने मुस्कराते हुए कहा—"धन्य हो नटवर! तुम्हारी लीलाएँ अगाध हैं, पर क्या आप बता सकते हैं कि यदि आज आप मेरे पास नहीं आए तो आपका यह पीतांबर मेरे पास कहाँ से आ गया? देख लो न अभी भी मिष्टान्न का कुछ अंश इसमें बँधा हुआ है।"

ग्वालों ने पीतांबर खोलकर देखा—वही भोग, वही मिष्टान्न जो पूजागृह में था, पीतांबर में बँधा था। मनसुख को वह कौन देने गया, किसको पता था?

भगवान की महिमा कोई नहीं जान पाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वार्थ की बात नहीं ?

एक न्यायप्रिय राजा था। एक दिन वह साधु वेश में अपनी प्रजा की खैर-खबर लेने निकला। जब कभी वह जनता के दु:ख-दरद को सुनने निकलता, तो किसी अंगरक्षक या मंत्री को साथ में नहीं लेता था और न राज्य के अधिकारियों को किसी प्रकार की सूचना देता। कितने ही व्यक्तियों से मिलते करते हुए वह एक बगीचे में पहुँचा। वहाँ एक वृद्ध माली नया पौधा लगा रहा था। उसे देखकर राजा ने पूछा—"यह तो अखरोट जैसा पौधा मालूम पड़ता है।" "हाँ! हाँ! भैया, तुम्हारा अनुमान ठीक है।" माली का उत्तर था। राजा बोला—"अखरोट तो बीस-बाईस वर्षों में फलता है, तब तक क्या इस पौधे के फल खाने के लिए तुम बैठे रहोगे ?" माली बोला—"बात यह है कि हमारे बाप-दादा ने इस बगीचे को लगाया था। खून-पसीना एक करके इसको सींचा, देखभाल की और फल हम लोगों ने खाए। अब हमारा भी तो यह कर्त्तव्य है कि कुछ वृक्ष दूसरों के लिए लगा दें। अपने खाने के लिए पेड़ लगाना तो स्वार्थ की बात होगी। मैं यह नहीं सोच रहा हूँ कि आज इस पौधे की क्या उपयोगिता है ? यह भविष्य में दूसरों को फल प्रदान करे, बस यही इच्छा है।" वृद्ध माली की बात सुनकर राजा अगले दिन अपने दरबार में मंत्रियों से बोला—"सभी वृद्धजन यही सोचें कि हमें बोने से मतलब है, भले ही उस फसल का लाभ आने वाली पीढ़ी ले, तो सारे समाज में भले लोगों का और अच्छी आदतों का विस्तार होने लगेगा।"

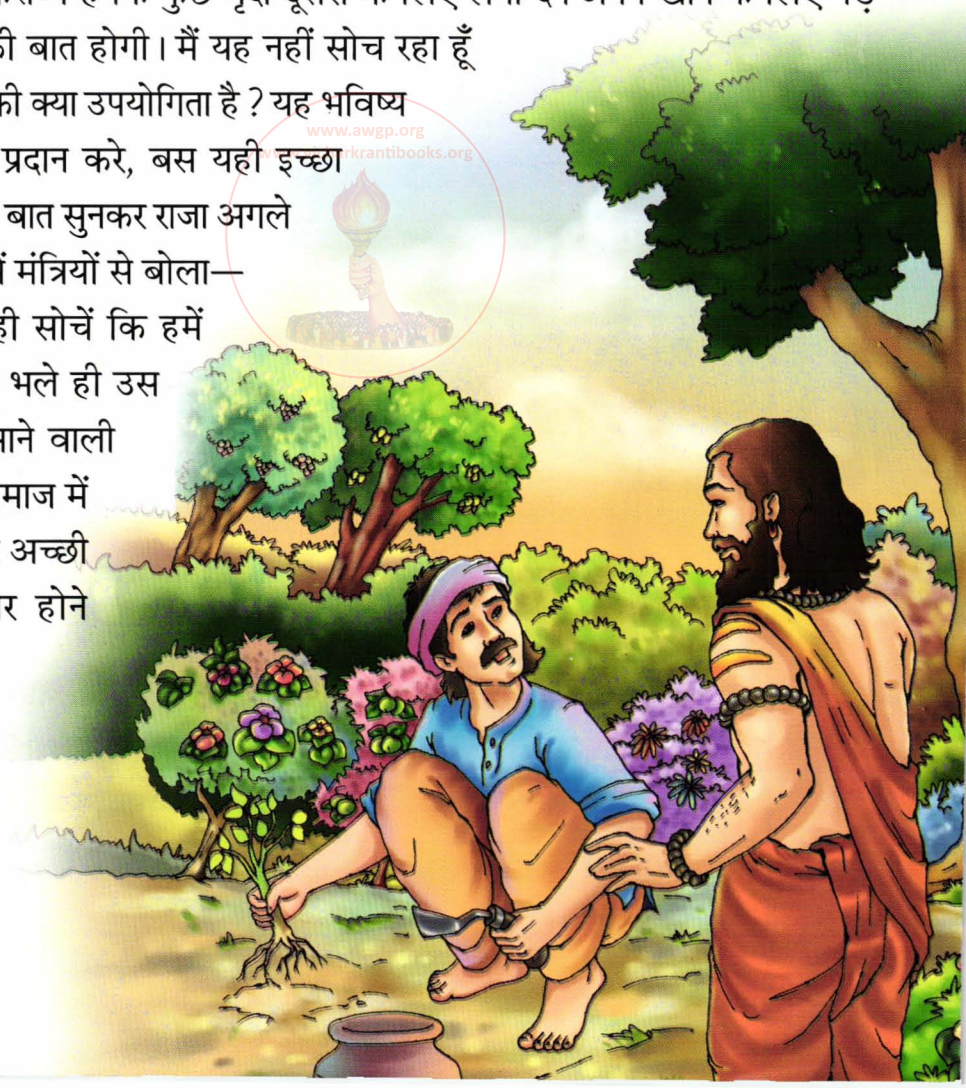

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पादरी की आत्मीयता

नैपल्स नाम का एक नगर था, उसमें आवारा लड़कों की भरमार थी। गरीब और पिछड़े लोगों के लड़के बुरीसंगत में पड़कर अपने-अपने गिरोह बना लेते थे और चोरी, उठाईगीरी, ठगी के धंधे से अपना गुजारा करते थे। नशेबाजी जैसी अनेक गंदी आदत बढ़ जाने से वे अच्छे नागरिकों की तरह पढ़ना एवं आजीविका कमाना पसंद भी नहीं करते थे।

पादरी बोरेली का ध्यान इन लड़कों की ओर गया। उनने इनके सुधार का बीड़ा उठाया। सूखे उपदेशों को वे सुनने तक को तैयार न होते थे। अस्तु बोरेली ने उनमें घुल-मिलकर रहने तथा मित्रता गाँठने का उपाय अपनाया। पादरी नई उम्र के थे और विनम्र भी। इसलिए उन्हें उनमें घुल-मिल जाने में अधिक कठिनाई नहीं हुई। पादरी ने एक टूटा हुआ पुराना मकान किराये पर ले लिया। ऐसे लड़कों का न तो कहीं कोई घर था और न खाने-पीने का ठिकाना। बोरेली के इस घर में रात्रि को रहने की, शाम को ताजा खाना पकाकर खाने की सुविधा हुई तो सैकड़ों लड़के उस आवारा आश्रम में आने लगे। यही अवसर था जिसमें उन्हें पढ़ाने, कमाने, खाने तथा गंदी आदत छोड़ने के लिए सहमत किया जा सकता था। इस योजना के अनुसार हजारों को सभ्य तथा स्वावलंबी बनाया जा सका। पादरी समुदाय ने अन्य स्थानों में भी यह योजना चलाई और बिगड़ों को सुधारने में आशाजनक सफलता पाई। जब मन में दूसरों के प्रति करुणा और अपनेपन का भाव हो तो व्यक्ति औरों के हित के लिए छटपटाता है। ऐसा जीवन ही सफल-सार्थक है।

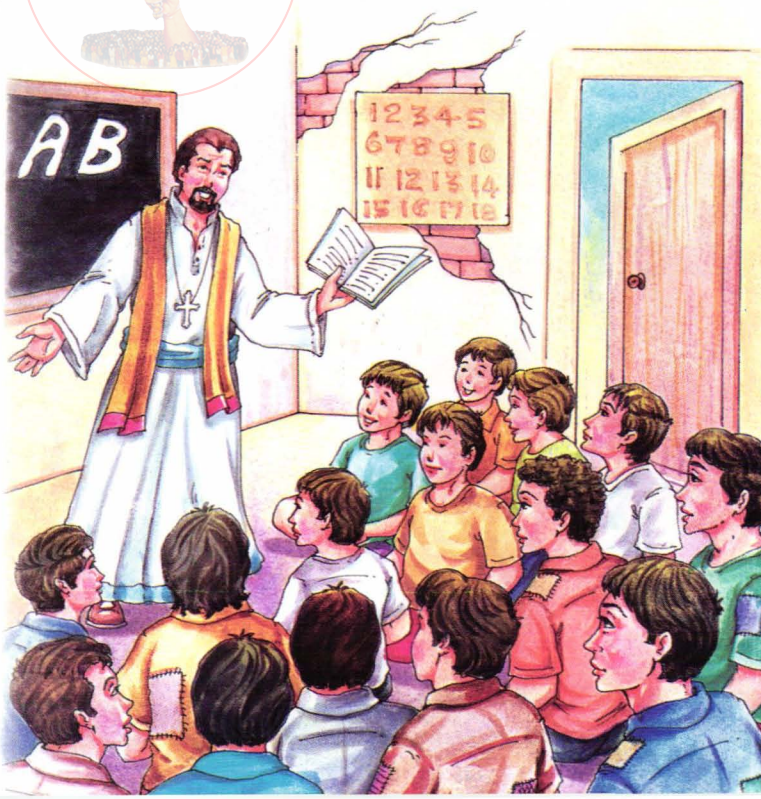

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिनीची का विश्व प्रेम

तीन दिन से पत्नी और बच्चों को भोजन न मिला था। गृहस्वामी प्रयत्न करने पर भी एक समय का भोजन न जुटा सका। अंततः वह निराश हो गया, उसे अपना जीवन बेकार लगने लगा। वह अपने घर से चला आया और आत्महत्या करने की तैयारी पर विचार करने लगा।

पीछे से किसी ने कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—"मित्र! इस मूल्यवान जीवन को खोकर तुम्हें क्या मिलेगा? निराश होने से तो कोई लाभ नहीं। मैं मानता हूँ कि तुम्हारे जीवन में आई हुई विपत्तियाँ ऐसा करने के लिए विवश कर रही हैं, पर क्या तुम इन विपत्तियों को हँसते-हँसते पीछे नहीं ढकेल सकते?"

आत्मीयता से परिपूर्ण शब्दों को सुनकर वह युवक रो पड़ा। सिसकियाँ भरकर मजबूरी की सारी कहानी सुना दी। अब तो सुनने वाले व्यक्ति की आँखों में भी आँसू थे। यह सहृदय व्यक्ति जापान का प्रसिद्ध कवि शिनीची ईंगुची था।

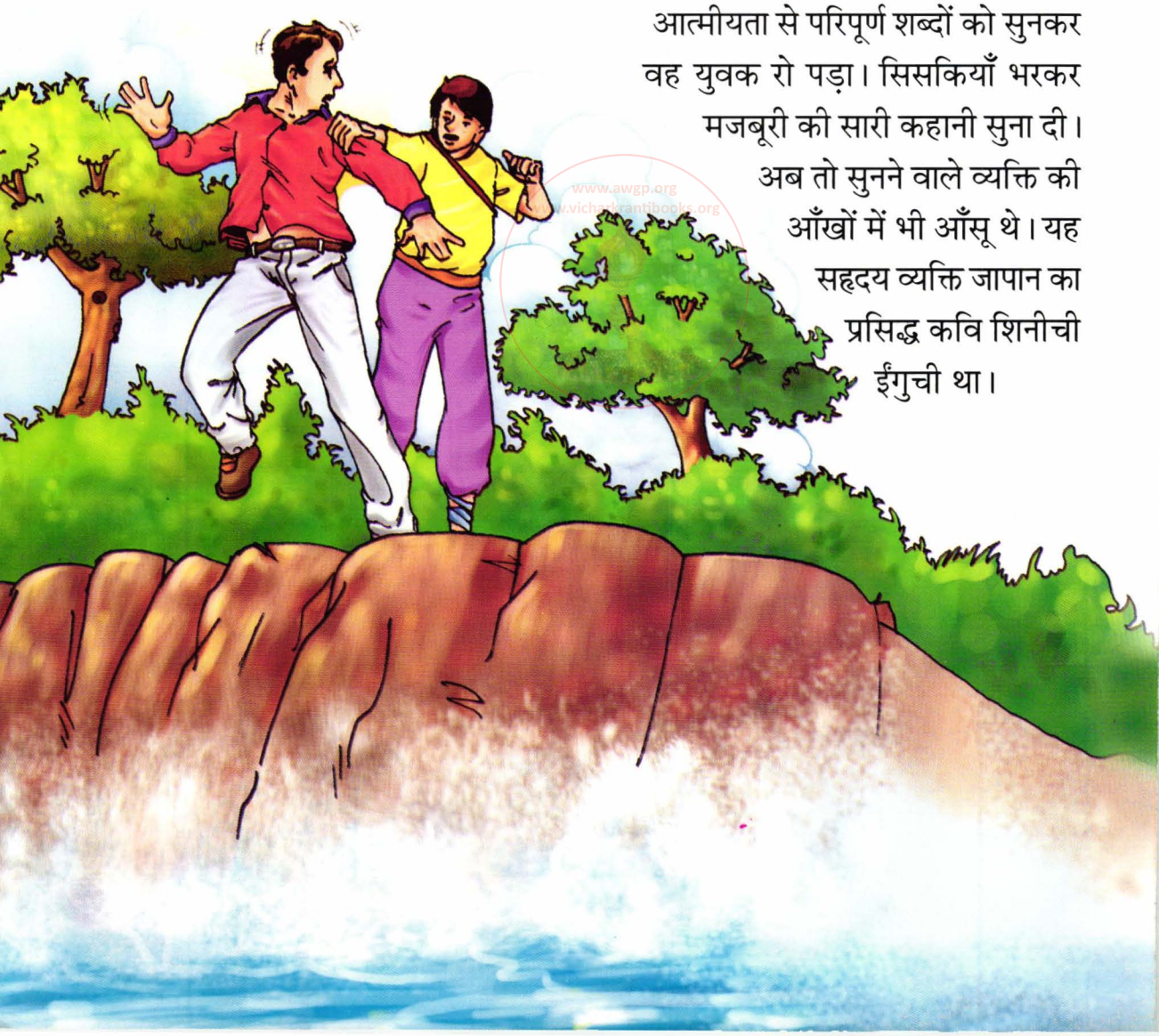

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उस युवक की परेशानियों ने भावुक कवि शिनीची को प्रभावित किया। उसने वहीं यह संकल्प किया कि मैं अपनी कमाई का अधिक से अधिक भाग उन व्यक्तियों की सेवाओं में लगाया करूँगा, जो अभावग्रस्त हैं। उस समय कवि शिनीची ने युवक के परिवार की भोजन व्यवस्था हेतु कुछ धनराशि दे दी, पर घर लौटकर उसने गुप्तदान पेटी बनाई और मुख्य चौराहे पर लगवा दी।

उस पेटी के ऊपर लिखा गया—"जिन सज्जनों को सचमुच धन की आवश्यकता हो, वे इस पेटी से निकालकर अपना काम चला सकते हैं। यह धन यदि कतिपय अभावग्रस्त व्यक्तियों की सहायता में लग सका, तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। धन्यवाद!" उस पेटी पर नाम किसी व्यक्ति का न था। क्योंकि शिनीची की कर्म और सेवा में आस्था थी। वह लोकैषणा से बहुत दूर थे। विश्व-बंधुत्व जिनका लक्ष्य हो, वे कभी नाम कमाने की इच्छा नहीं रखते। परदु:खकातरता का यह गुण ही उन्हें महामानव का पद दिलाता है।

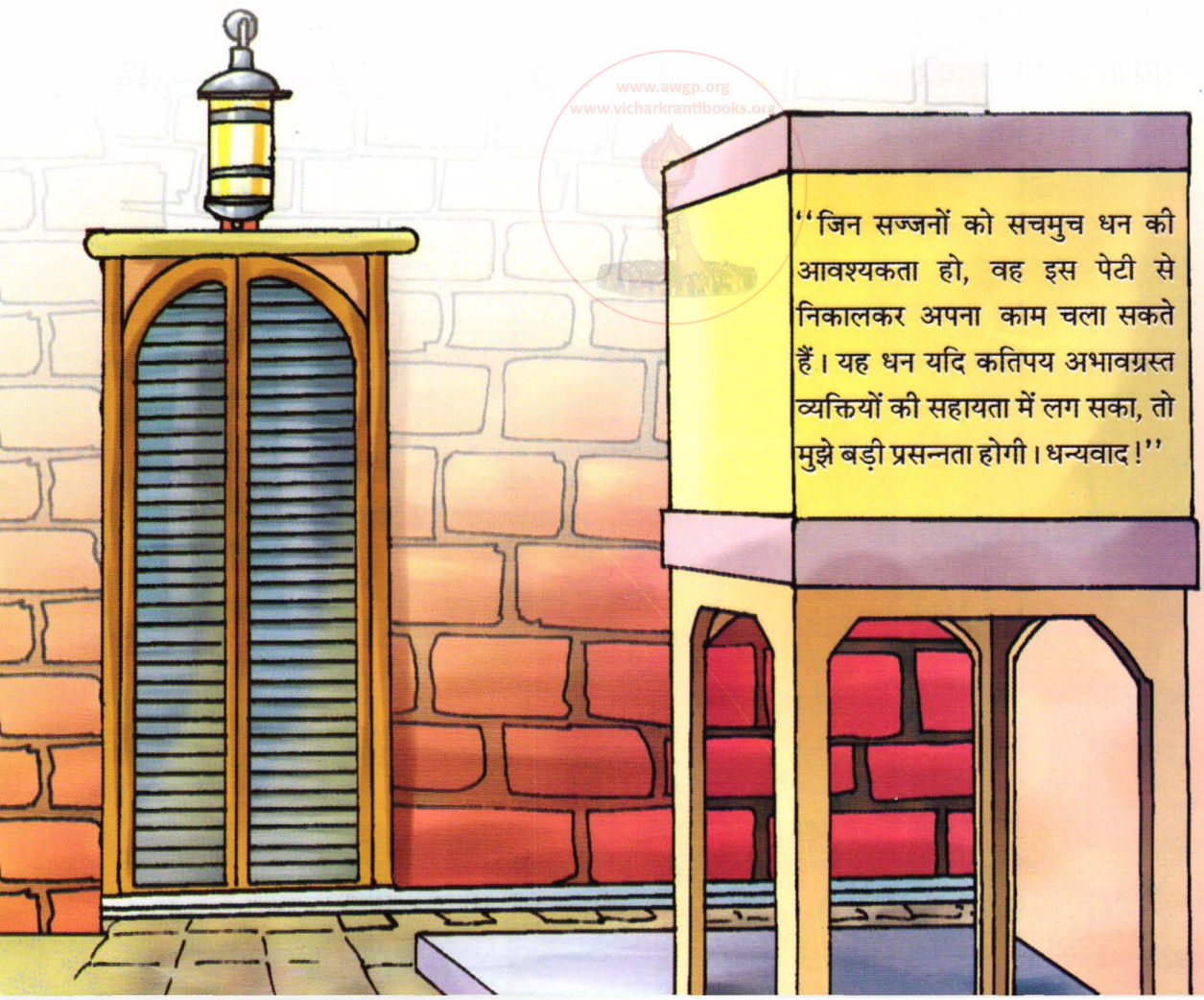

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चार बार भागवत सुनी

वीतराग शुकदेव जी के मुँह से राजा परीक्षित ने भागवत पुराण की कथा सुनकर मुक्ति प्राप्त की थी। यह बात एक धनवान व्यक्ति ने सुनी तो उसके मन में भागवत पर बड़ी श्रद्धा हुई और वह भी मुक्ति के लिए किसी ब्राह्मण से कथा सुनने के लिए आतुर हो उठा।

ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उन्हें भागवत के एक बहुत बड़े विख्यात पर लालची पंडितजी मिले। कथा-आयोजन का प्रस्ताव किया तो पंडितजी बोले—"यह कलियुग है। इसमें धर्मकृत्यों का पुण्य चार गुना कम हो जाता है, इसलिए चार बार कथा सुननी पड़ेगी।" चार बार कथा-आयोजन की सलाह देने का कारण था चार बार में खूब धन मिल जाना। पंडितजी को दक्षिणा देकर धनी व्यक्ति ने चार भागवत सप्ताह सुने परंतु लाभ कुछ नहीं हुआ। धनी उच्चकोटि के संत से मिला और पूछा भागवत सुनने का लाभ परीक्षित कैसे ले सके और मुझे क्यों नहीं मिला? उन्होंने इसका कारण बताया कि राजा परीक्षित अपनी मृत्यु को निश्चित जानकर, संसार से पूर्णतया विरक्त होकर कथा सुन रहे थे और मुनि शुकदेव सर्वथा निर्लोभ रहकर कथा सुना रहे थे। तुम और तुम्हारा पंडित दोनों ही लोभी थे, इस कारण लाभ नहीं मिला।

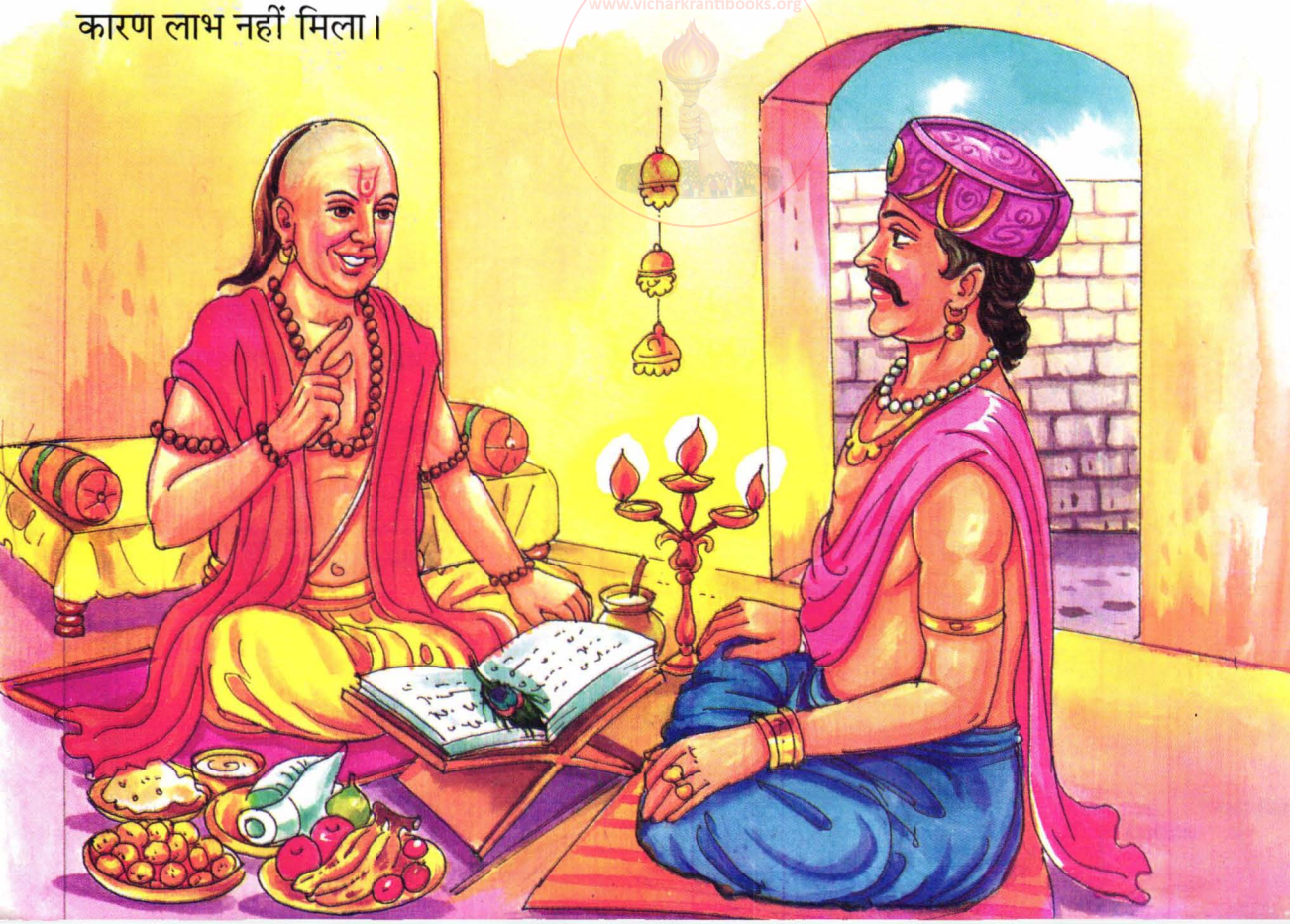

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्री गोविंद रानाडे की न्यायनिष्ठा

एक न्यायाधीश सरकारी काम पर पैदल ही सतारा जिले का दौरा कर रहे थे। उन्होंने अपनी पत्नी को संदेश दिया था कि पीछे घोड़ा गाड़ी से आ जाना। मार्ग में एक आम के बाग में बढ़िया आम दिखाई दिए। न्यायाधीश की पत्नी की इच्छानुसार गाड़ीवान ने कुछ आम पेड़ से तोड़े। संयोगवश एक बड़ा आम उनके हाथ पर आ गिरा और उनका सोने का कंगन टूट गया। टूटे हुए कंगन का एक टुकड़ा भी नहीं मिल पाया जिसके कारण उन्हें बड़ा पछतावा रहा। पड़ाव पर आकर न्यायाधीश की पत्नी ने सारी कहानी पतिदेव को सुनाई। न्यायाधीश कहने लगे— "ठीक ही हुआ। बिना अधिकार के पराया माल प्राप्त करने का यही परिणाम होना चाहिए। प्रभु ने तुम्हें आगे ऐसा न करने के लिए दंड दिया है। मेरा भी चाकू खो गया। तुम्हारे साथ थोड़ी सजा मुझे भी मिली है।" श्री गोविंद रानाडे न्यायाधीश थे। वे केवल दूसरों के मुकदमों के फैसले ही नहीं करते थे, वरन अपनों के साथ भी वही बरताव करते थे। भगवान जितना दयालु है, उतना ही कर्मों के अनुसार दंड भी देता है।

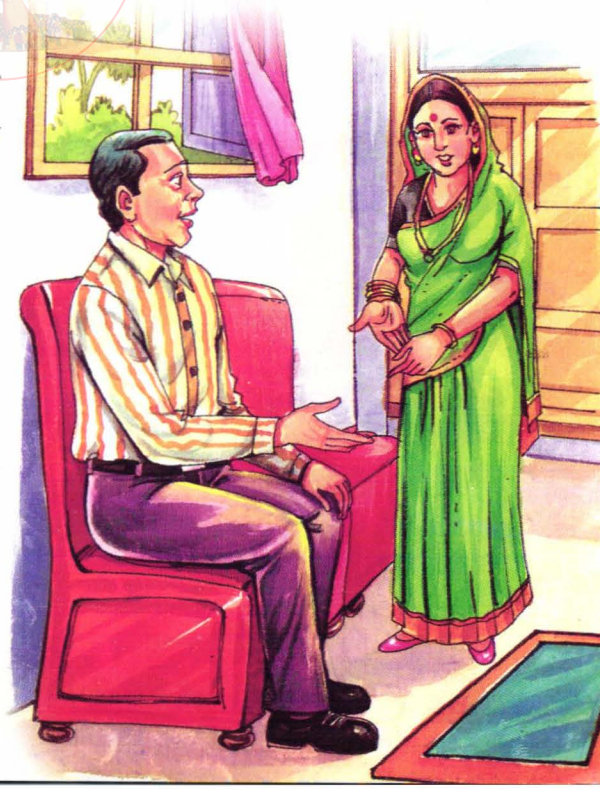

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संतोषी सदा सुखी

ब्रह्माजी की इच्छा हुई 'सृष्टि रचें।' ब्रह्माजी ने कार्य आरंभ किया। पहले एक कुत्ता बनाया और उससे उसकी जीवनचर्या में क्या मिला जानने के लिए पूछा—"संसार में रहने के लिए तुझे कुछ कमी तो नहीं?" कुत्ते ने कहा—"भगवन्! मुझे तो सब अभाव ही अभाव दिखाई देते हैं, न वस्त्र, न आहार, न घर और न इनके उत्पादन की शक्ति।" ब्रह्माजी बहुत पछताए। फिर रचना शुरू की—एक बैल बनाया। जब वह ब्रह्मलोक पहुँचा तो उन्होंने उससे भी यही प्रश्न किया। बैल दुखी होकर बोला—"भगवन्! आपने भी मुझे क्या बनाया, खाने के लिए सूखी घास, हाथ-पाँवों में कोई अंतर नहीं, सींग और लगा दिए। यह भोंडा शरीर लेकर कहाँ जाऊँ?" तब ब्रह्माजी ने एक बहुत सुंदर शरीरधारी मनुष्य पैदा किया। उससे भी ब्रह्माजी ने पूछा—"वत्स, तुझे अपने आप में कोई अपूर्णता तो नहीं दिखाई देती?" थोड़ा ठिठककर मनुष्य ने सोचकर कहा—"भगवन्! मेरे जीवन में कोई ऐसी चीज नहीं बनाई जिसे मैं उन्नति या धन-दौलत कहकर संतोष कर सकता।"

ब्रह्माजी गंभीर होकर बोले—"वत्स! तुझे हृदय दिया, आत्मा दी, अपार क्षमता वाला सबसे बढ़िया शरीर दिया। अब भी तू अपूर्ण है तो तुझे कोई पूर्ण नहीं कर सकता।"

मनुष्य को जो भगवान ने दिया है उसी में संतोष रखना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भारतीय होने का गर्व

बात उन दिनों की है जब अँगरेजी संस्कृति का इतना प्रसार नहीं हुआ था जैसा आज है। अँगरेज अपनी सभ्यता का अधिक प्रसार करने में लगे रहते थे। सरकारी कर्मचारी को अँगरेजी पोशाक पहनना आवश्यक था। परंतु सरकारी अफसर होते हुए भी सर आशुतोष मुकर्जी को यह स्वीकार नहीं था। उनका ऑफिसर उनसे सदैव इस बात पर नाराज रहता था कि वे धोती-कुरता ही पहनते थे। एक दिन एक मित्र ने कहा—"यदि पदोन्नति के लिए आप अँगरेजी पोशाक पहन लें तो इसमें हर्ज ही क्या है?" मुकर्जी बोले—"जब अँगरेज अपनी पोशाक को इतना महत्त्व देते हैं, तो हम इतने मूर्ख नहीं हैं कि पैसे के लिए अपना जातीय स्वाभिमान त्याग दें?" अँगरेज अफसर को जब उनके इस जातीय स्वाभिमान का पता लगा तो वह उनके व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ और अपने दफ्तर के सर्वोच्च कार्यकर्त्ता का पद उन्हें प्रदान कर दिया।

हमें भारतीय होने का गर्व होना चाहिए। अपनी संस्कृति के अनुसार ही वेशभूषा अच्छी होनी चाहिए ।

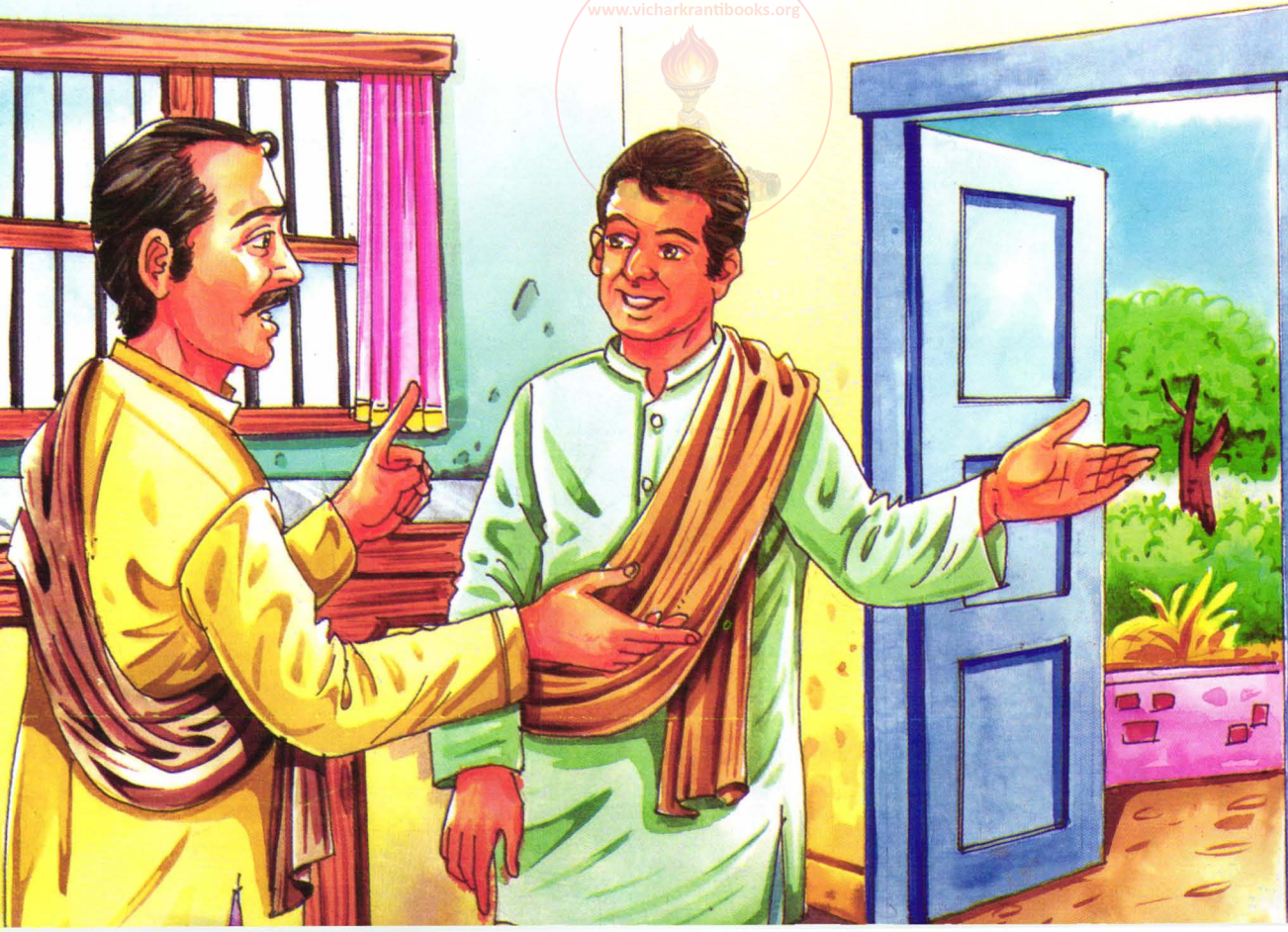

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फरहाद का नहर निकालना

एक बार घोषणा हुई कि जो कोई भी इस नगर के पास तक नहर खोदकर ले आएगा उसका विवाह सुंदर कन्या शीरी के साथ कर दिया जाएगा। उस नगर में पानी की कमी थी। कोई भी साधन न होते हुए भी एक युवक जिसका नाम फरहाद था उसने साहस किया और अथक संकल्प बल के साथ पहाड़ काटकर नहर खोदने के काम में अकेला लग गया। इस अभूतपूर्व साहस से लोग बहुत प्रभावित हुए और देखने आने वाले लोग भी कार्य में मदद करने लगे। आखिर कुछ दिन में असंभव दीखने वाला काम संभव हो गया और उस नगर में जल की नहर लाने में सफल हुए फरहाद का विवाह शीरी के साथ हो गया।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री महाशक्ति

क्षत्रिय कुल में उत्पन्न विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि पद वेदमाता गायत्री की कृपा से प्राप्त हुआ। यह प्रसंग उठने पर जन्मेजय ने पूछा—"गायत्री को वेदमाता क्यों कहा गया?"

द्रष्टा आस्तीक ऋषि ने कहा—"वेदमाता ही नहीं, देवमाता और विश्वमाता यही तीनों संबोधन आद्यशक्ति गायत्री के हैं। सृष्टि के प्रारंभ में ब्रह्मा को स्फुरणा देने, ज्ञान-विज्ञान का विस्तार करने के कारण ये वेदमाता कहलाती हैं।"

"जब सृष्टि संचालन का क्रम चलता है, तब देव शक्तियों का क्रम चलता है और तब देवशक्तियों को पोषित करने का कार्य यही शक्ति करती है। इसके संसर्ग से देवत्व का विकास होता है, इसलिए इसे देवमाता कहते हैं।"

"जब कभी विश्व स्तर पर अनास्था का, कुविचार-दुर्भावना का अंधकार छा जाता है, तब उसको मिटाने के लिए यह महाशक्ति प्रत्येक व्यक्ति पर अपना प्रभाव डालती है। स्वर्ग से गंगा को भू पर लाने जैसा प्रचंड तप कोई युगपुरुष करता है तब यह दिव्यधारा जन-कल्याण हेतु महाप्रज्ञा के रूप में जन-जन को स्पर्श करती है। तब यह विश्वमाता की भूमिका संपन्न करती है। उस समय वेद अर्थात सद्ज्ञान और देवत्व के विस्तार के अनोखे प्रयोग होते हैं।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सेनापति बूथ

इंग्लैंड के एक प्रसिद्ध नगर में जन्मे बूथ ने पादरी बनने का निश्चय किया और उनने वह शिक्षा प्राप्त करके धर्मोपदेशक का काम सँभाला। एक दिन उन्होंने एक छोटे लड़के को सड़क पर गिरते और पीछा करने वालों द्वारा पिटते देखा। पादरी कुतूहलवश रुक गए। मालूम हुआ कि लड़का हलवाई की दुकान से रोटी चुराकर भागा है। पादरी ने पूछा तो लड़के ने कहा—"पिटाई सहन कर ली गई, पर भूख सहन न हो सकी।" छोटा बालक अनाथ था। कुछ कमाने लायक भी उसकी उम्र एवं स्थिति नहीं थी।

पादरी रातभर सो नहीं सके। मस्तिष्क में वही शब्द गूँजते रहे, जो बच्चे ने कहे थे। दूसरे दिन उनने पादरी पद से इस्तीफा दे दिया और अनाथों, रास्ता भटकों को प्यार से रास्ते पर लाने और शिक्षा तथा उद्योग सिखाने का काम हाथ में लिया। इस संगठन का नाम रखा 'मुक्ति सेना'। पादरी को जनरल कहा जाने लगा। उनने ऐसे हजारों लोगों की तलाश की और उन्हें सुधारा तथा उद्योगी बनाया। उनकी लगन ने ६० देशों में उस संस्था की शाखाएँ बनाईं और पतितों को ऊँचा उठाने के कार्य में आशातीत सफलता पाई। इस कार्य में धन की भी कमी न रही।

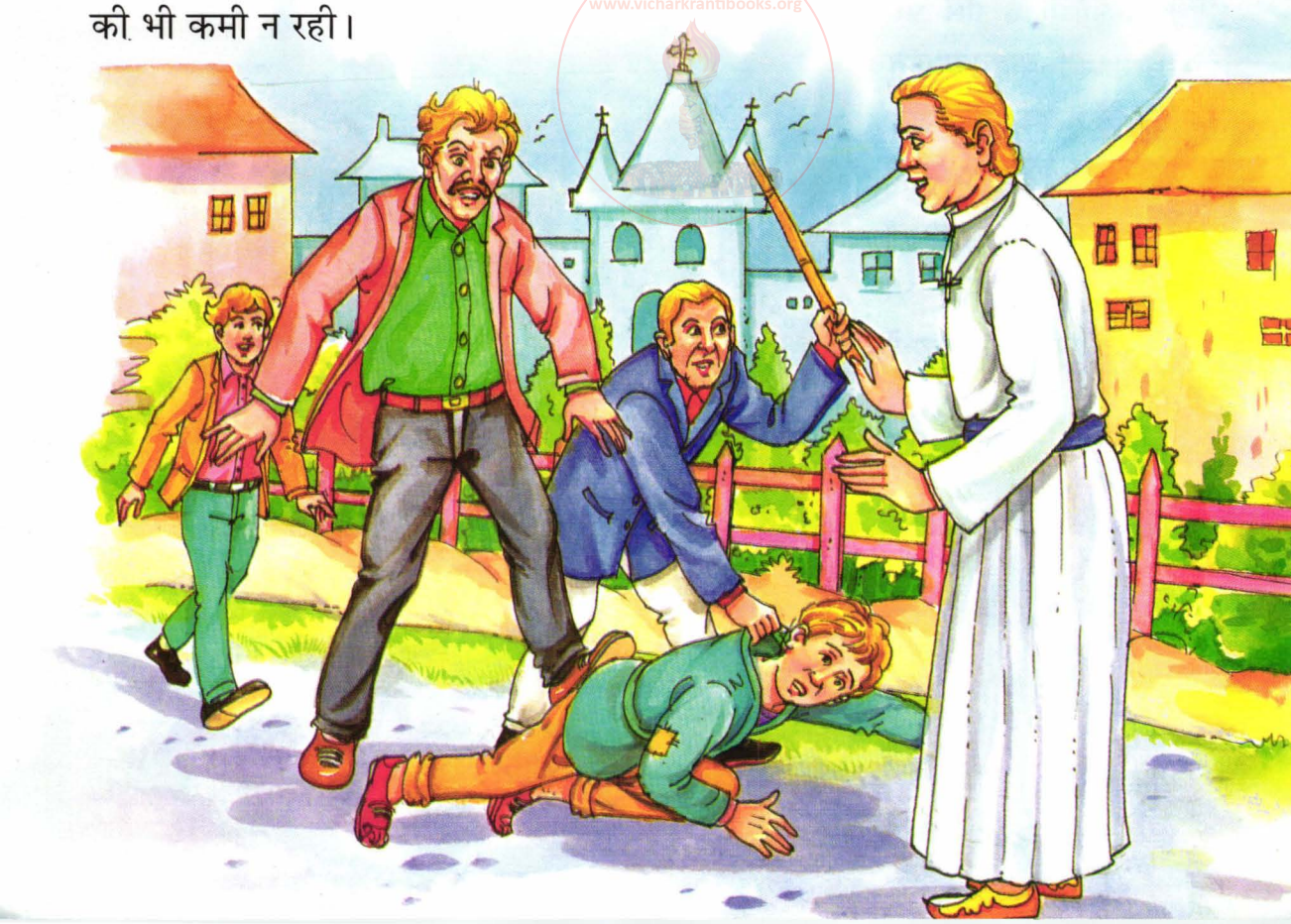

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुंदरता शरीर या आत्मा की ?

एक बार की बात है कि शरीर तथा आत्मा में परस्पर संवाद चल रहा था। शरीर ने कहा—''मैं कितना सुंदर हूँ, आकर्षक व बलवान हूँ।'' आत्मा बोली—''तुम अपनी अपेक्षा मुझे अधिक सुंदर, आकर्षक व बलवान बना दो, तुम्हारी ये विशेषताएँ मेरे सुंदर हुए बिना क्षणिक ही हैं। मुझे सुंदर बनाकर तुम भी शाश्वत सौंदर्य से युक्त हो जाओगे।'' किंतु शरीर की समझ में कुछ न आया। वह आकर्षणों में उलझा जीवन समाप्त करता रहा। शरीर से आत्मा के अलग होने का समय आ पहुँचा, अब शरीर को ज्ञात हुआ कि यदि आत्मा को भी उसने सुंदर बनाया होता, शक्ति दी होती तो उसका स्वरूप भी निखर गया होता, मरने के बाद भी उसे याद किया जाता। चलते समय आत्मा बोली—''मैं तो जाती हूँ। यदि तुम पहले से चेते होते, प्राप्त अधिकार का सदुपयोग कर अपने मन को सुंदर बनाते तो अमर हो जाते, महामानव कहलाते।'' शरीर सिर धुनता रहा, नया जन्म लेने आत्मा चली गई।

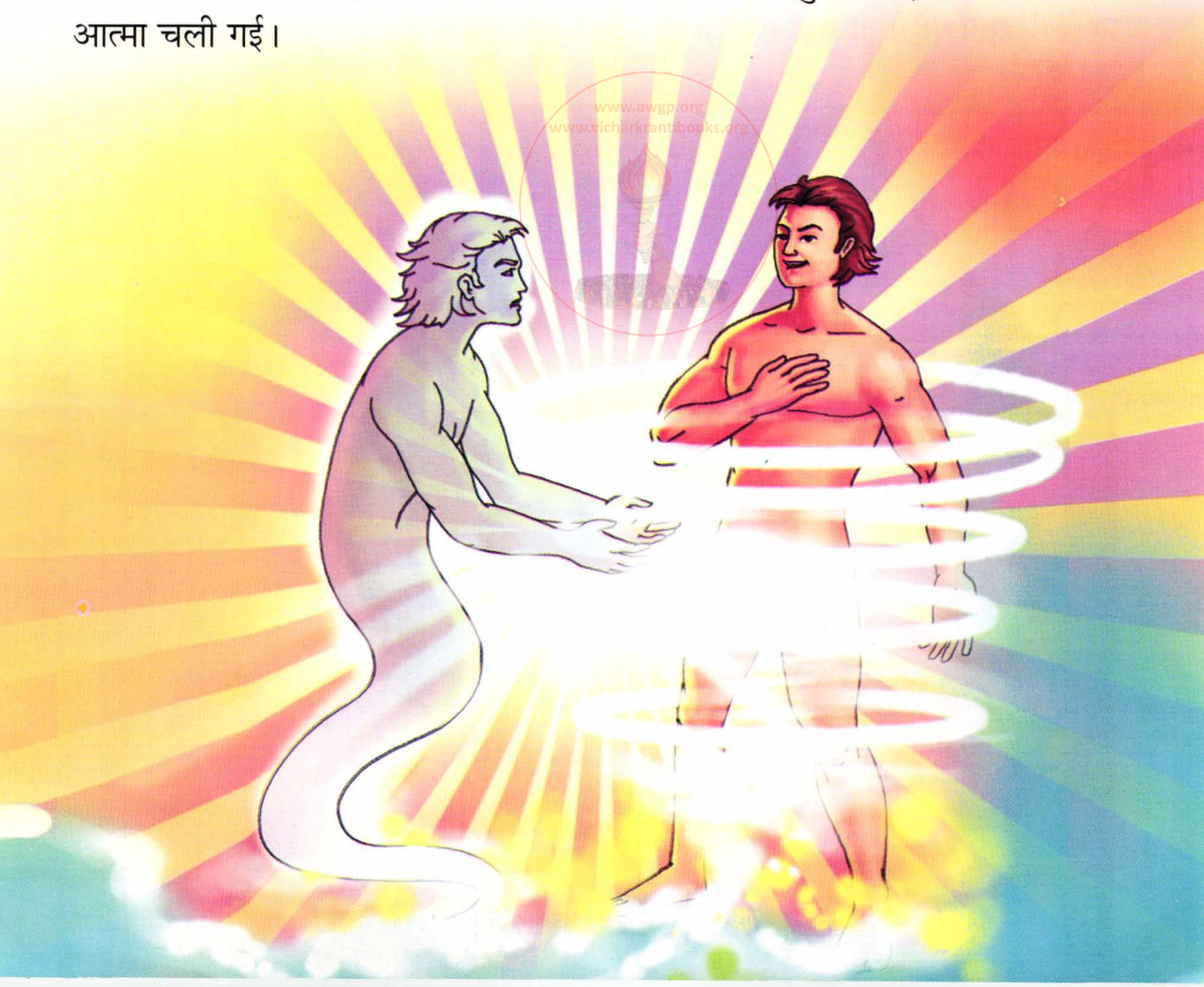

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संत की परीक्षा

संत पुरंदर की निर्लोभिता एवं तपश्चर्या की चर्चा विजय नगर के महाराज कृष्णदेवराय ने बहुत सुनी थी, पर उन्हें सहसा विश्वास नहीं होता था कि क्या ऐसा भी संभव है ? क्या व्यक्ति स्वयं विद्वान होते हुए तथा साधनों के सहज उपलब्ध रहते हुए भी उन्हें ठुकरा दे और लोकसेवी का जीवन जिए ? गृहस्थ जीवन और लोक सेवा ऐसी गरीबी में कैसे साथ-साथ निभ सकते हैं ?

अपने मंत्री व्यासराय की सहायता से उन्होंने संत की परीक्षा लेने का निश्चय किया। उन्होंने संत को परोक्षत: कहलवाया कि वे अपनी भिक्षा राजभवन से ले लिया करें। परीक्षा लेने के लिए उन्होंने भिक्षा में दिए जाने वाले चावलों में रत्न-हीरे मिला दिए। नित्य उन्हें इसी प्रकार प्रसन्न भाव से आते देख उन्हें शंका हुई, अपने मंत्री से बोले—"आइए! जिन संत की निस्पृहता की बड़ी प्रशंसा सुनी थी कि वे लालची नहीं हैं , उसे उनके घर चलकर परखें।" वहाँ पहुँचे तो बड़ा विचित्र दृश्य देखा। सादगी भरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन जी रहे संत व उनकी पत्नी में परस्पर संवाद चल रहा था। पत्नी हीरे आदि बीनकर अलग रखती जाती थी व कहती जा रही थी—"आजकल आप न जाने कहाँ से भिक्षा लाते हैं ? इन चावलों में तो कंकड़-पत्थर भरे पड़े हैं।" इतना कहकर बनावटीवेश में राजा और मंत्री के सामने ही उसे वे कचरे के ढेर में फेंक आईं। राजा को पहचानकर वे बोलीं—"पहले हम भी यही सोचते थे कि ये हीरे-मोती हैं। पर जब से भक्ति का पथ अपनाया और लोकसेवा की ओर कदम बढ़ाया तो गुजारे योग्य ब्राह्मणोचित आजीविका से ही काम चल जाता है। अब इस बेकार संपदा का मूल्य हमारे लिए तो हीरों के नहीं, कंकड़-पत्थर के बराबर ही है।"

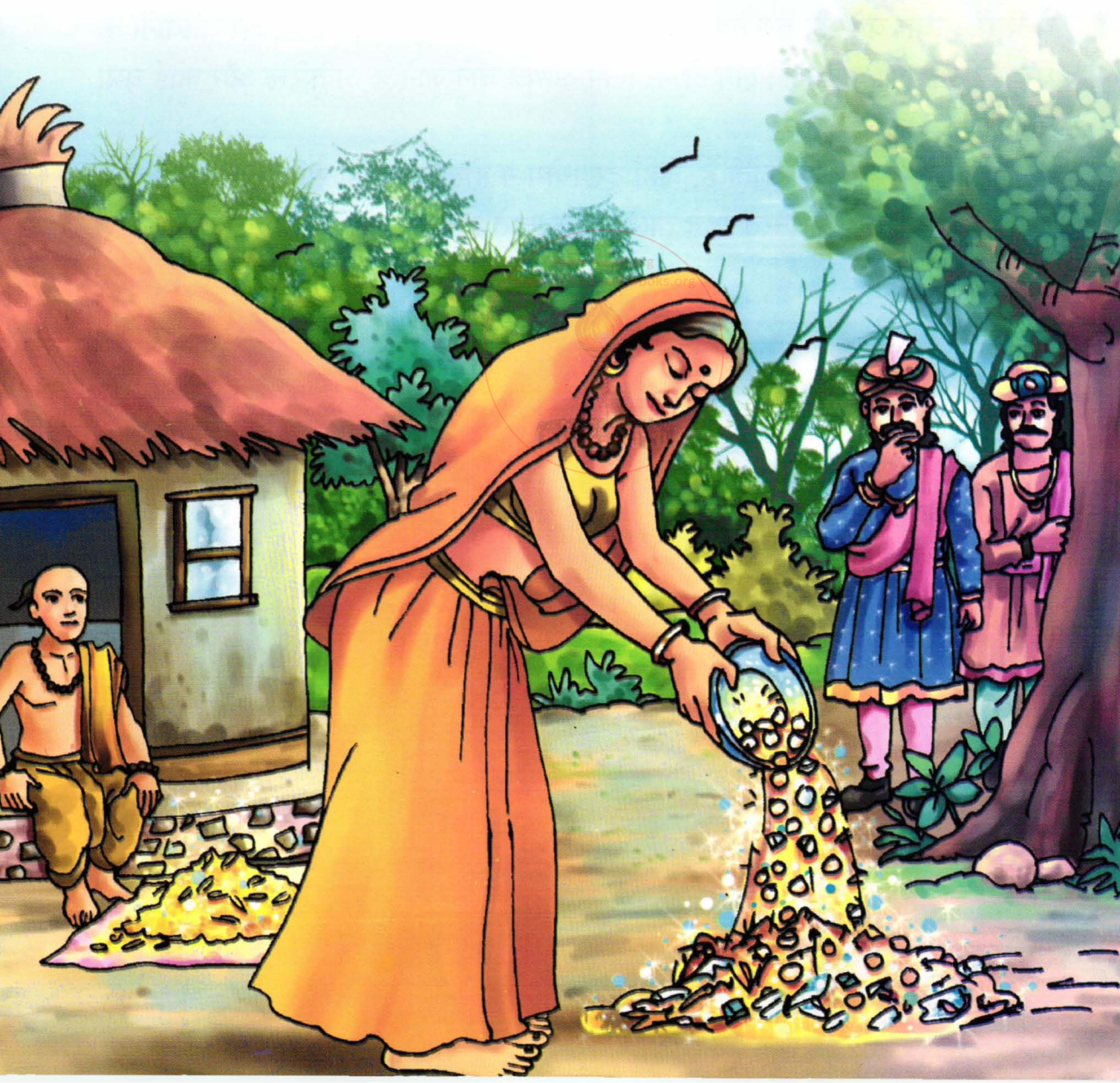

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सौभाग्य लक्ष्मी क्यों गईं ?

बलि अपने समय के धर्मात्मा राजा थे। उनके राज्य में सतयुग विराजता था। सौभाग्य लक्ष्मी बहुत समय तो उस क्षेत्र में रहीं, पर पीछे अनमनी होकर किसी अन्य लोक को चली गईं। इंद्र को आश्चर्य हुआ और इस स्थान-परिवर्तन का कारण पूछ ही बैठे।

सौभाग्य लक्ष्मी ने कहा—"मैं उद्योग लक्ष्मी से भिन्न हूँ। मात्र पराक्रमियों के यहाँ ही उसकी तरह नहीं रहती। मेरा निवास चार स्थानों पर होता है—एक तो जो परिश्रम करते हैं, दूसरे वे जो विवेकपूर्वक आगे की योजना बनाते हैं। तीसरे जिनमें धैर्य तथा साहस होता है और चौथे जो उदार सहकार की भावना से कार्य करते हैं। बलि के राज्य में जब तक ये चारों आधार बने रहे, तब तक वहाँ रहने में मुझे प्रसन्नता थी। पर अब जब धनवानों के घरवाले उन गुणों को भूलने लगे तो मेरे लिए अन्यत्र चले जाने के अतिरिक्त और कोई चारा न था।"

धन लक्ष्मी वहीं विराजती है, जहाँ दुरुपयोग न होता हो, जहाँ सदैव श्रम करने वाले तथा दूसरों की सेवा में निरत रहने वाले व्यक्ति रहते हों।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नानक की सीख

बगदाद के शासक ने जरूरत से ज्यादा अपने खजाने में धन-संपत्ति जमा कर ली। संपत्ति जमा करने के लिए वह प्रजा पर तरह-तरह के अन्याय और अत्याचार भी किया करता था। उससे प्रजा बड़ी दुखी रहती थी। एक दिन गुरु नानक घूमते-घूमते बगदाद जा पहुँचे। खलीफा के महल के सामने ही वह कंकड़ों का छोटा सा ढेर जमा करके उन्हीं के पास बैठ गए। किसी ने खलीफा को नानक के आने की सूचना दी। खलीफा स्वयं वहाँ पहुँचा। कंकड़ों का ढेर देखते ही उसने पूछा—"महाराज! आपने यह कंकड़ किसलिए इकट्ठे किए हैं?" गुरु नानक ने मुस्कराकर उत्तर दिया—"खलीफाजी! इन्हें मैं भगवान के पास जाऊँगा तो उपहार में दूँगा।"

खलीफा जोर से हँसा और बोला—"अरे नानक! मैंने तो सुना था तू बड़ा ज्ञानी है पर तुझे इतना भी पता नहीं कि मरने के दिन कोई भी अपने साथ कंकड़ तो क्या सुई-धागा भी नहीं ले जा सकता।" गुरु नानक ने चुटकी ली—"मालूम नहीं महोदय, पर मैं आया इसी उद्देश्य से हूँ कि और तो नहीं पर शायद आप प्रजा को लूटकर जो धन इकट्ठा कर रहे हैं, उसे अपने साथ ले जाएँगे तो उसके साथ ही यह कंकड़ भी चले जाएँगे।"

इस प्रकार खलीफा समझ गया कि गलत ढंग से धन इकट्ठा करना ठीक नहीं और उसने उसी दिन से प्रजा को सताना बंद कर दिया तथा उनकी सेवा में जुट गया।

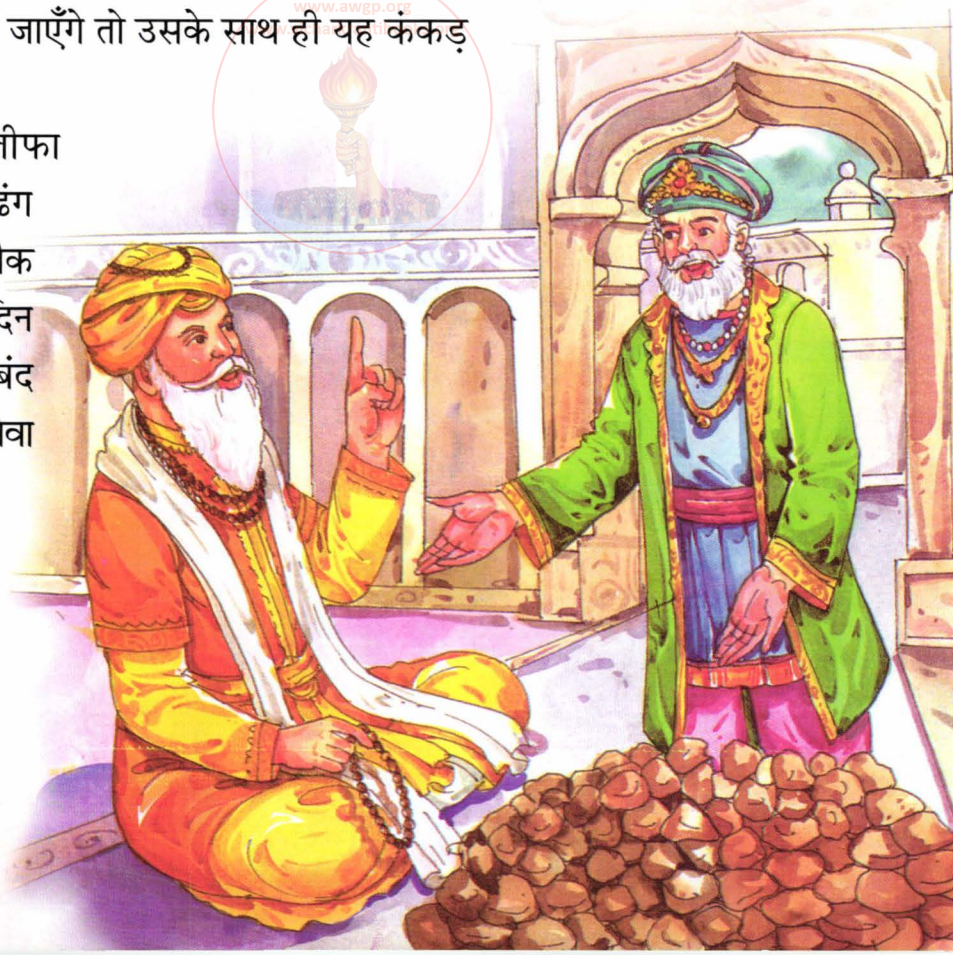

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मरक्षा आवश्यक है

एक दिन गांधीजी की कुटिया में पंडित जवाहरलाल नेहरू घुसे कि अंधेरे में वे गांधीजी की लकुटी से टकरा गए। पंडित जी को बड़ी खीझ हुई। बोले—"बापू! आप तो अहिंसा के पुजारी हैं, फिर यह लाठी यहाँ क्यों रख छोड़ी है?" गांधीजी बोले—"तुम्हारे जैसे शरारती लड़कों को सीधा करने के लिए।" थोड़ा गंभीर होकर बापू पुनः बोले—"अहिंसा का मतलब यह नहीं कि हर किसी से पिटने के लिए तैयार हो। अनीति के विरुद्ध आत्मरक्षा के साधन जुटाना भी नीति के अंतर्गत ही आता है।"

कभी-कभी बड़ों को भी बालकों के ढंग से समझाया जा सकता है।

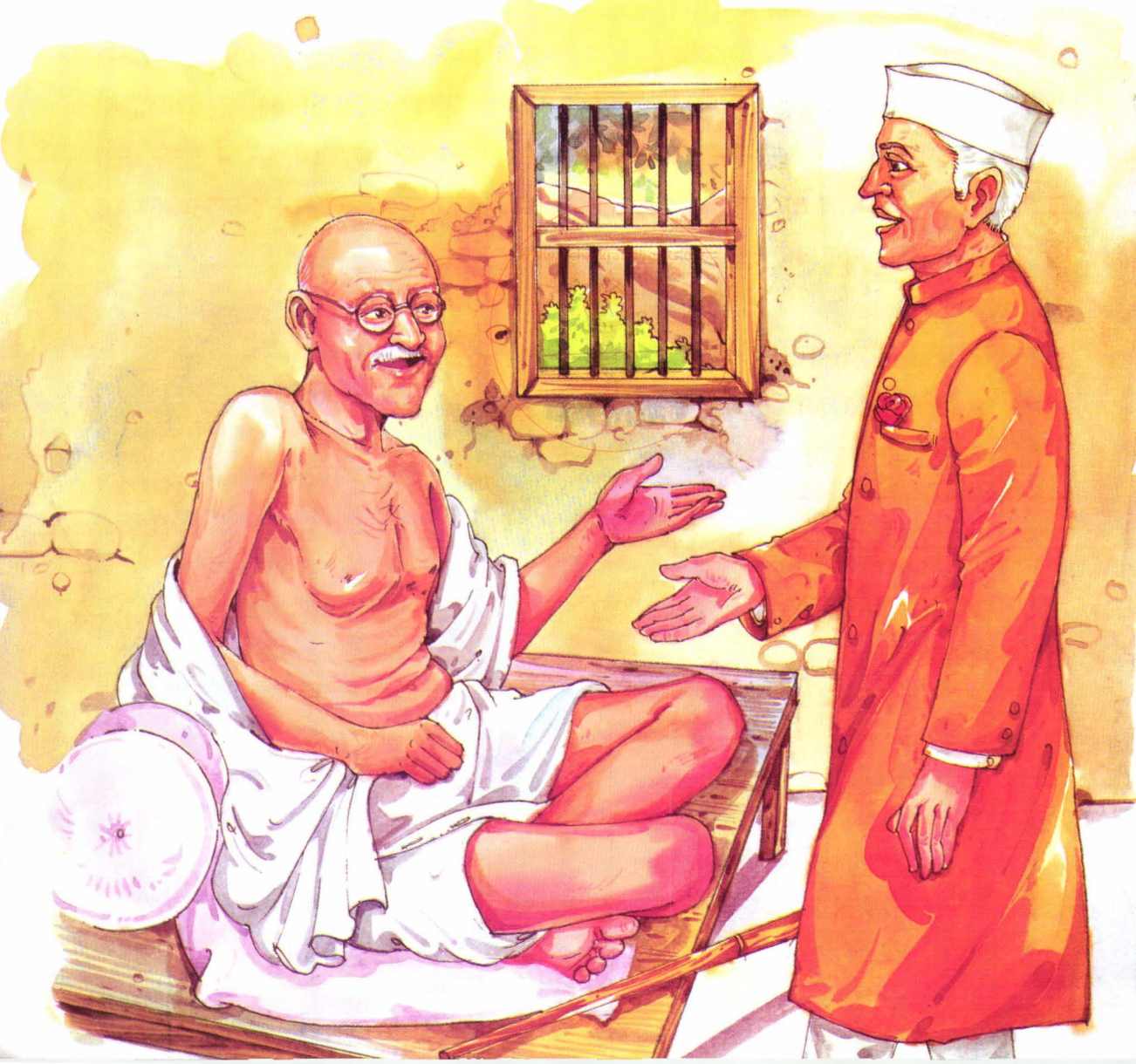

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बढ़ता चल

एक लकड़हारा जंगल से लकड़ी काटकर किसी प्रकार दु:ख और कष्ट सहते हुए अपने दिन व्यतीत करता था। एक दिन वह जंगल से पतली-पतली लकड़ी सिर पर ला रहा था कि अकस्मात कोई मनुष्य उसी रास्ते से जाते-जाते उसे पुकारकर बोला—"बच्चा, आगे बढ़ जा।" दूसरे दिन वह लकड़हारा उस मनुष्य की बात याद कर कुछ आगे बढ़ा तो मोटी-मोटी लकड़ियों का जंगल उसको दीख पड़ा। उस दिन उससे जहाँ तक बना लकड़ी काट लाया और बाजार में बेचकर उसने पहले दिन से अधिक पैसा कमाया। तीसरे दिन फिर मन में विचार करने लगा—"उस महात्मा ने तो मुझे आगे बढ़ जाने को कहा था। भला आज और थोड़ा आगे बढ़कर तो देखूँ।" यह सोचकर वह आगे बढ़ गया और उसे एक चंदन का वन दिखाई पड़ा। उस दिन उसने चंदन की लकड़ी बेचकर और अधिक रुपये कमाए। दूसरे दिन उसने फिर मन में विचार किया कि मुझे तो उन्होंने आगे ही जाने को कहा है, यह विचार कर और आगे जाकर उस दिन उसने ताँबे की खान पाई। वह यहीं पर न रुककर प्रतिदिन आगे ही बढ़ता गया और क्रमश: चाँदी, सोने और हीरे की खान पाकर बड़ा धनवान हो गया। भगवान ने यह मानव तन दिया है।

अपने मानव जीवन को उन्नत बनाते चलना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुर्योधन का दर्प

दुर्योधन को अहंकार दिखाए बिना चैन नहीं पड़ता था। पांडव वनवास में थे। दुर्योधन को महलों में संतोष न हुआ। वह अपने वैभव का प्रदर्शन करने जंगल के उसी क्षेत्र में गया, जहाँ पांडव रह रहे थे। वहाँ अपने को सर्वसमर्थ सिद्ध करने के लिए मनमाने ढंग से उत्सव मनाने लगा।

अहंकारी में शालीनता–सौजन्य नहीं रह जाता। अपने आगे किसी को कुछ समझता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी नहीं। उसी क्रम में कौरव गंधर्वों के सरोवर को गंदा करने लगे, रोकने पर भी नहीं माने। क्रुद्ध होकर गंधर्वराज ने उन्हें बंदी बना लिया। पता पड़ने पर युधिष्ठिर ने अर्जुन को भेजकर अपने मित्र गंधर्वराज से कौरवों को मुक्त कराया। दुर्योधन को शर्म से सिर झुकाना पड़ा।

अहंकार सदैव हानि ही पहुँचाता है।

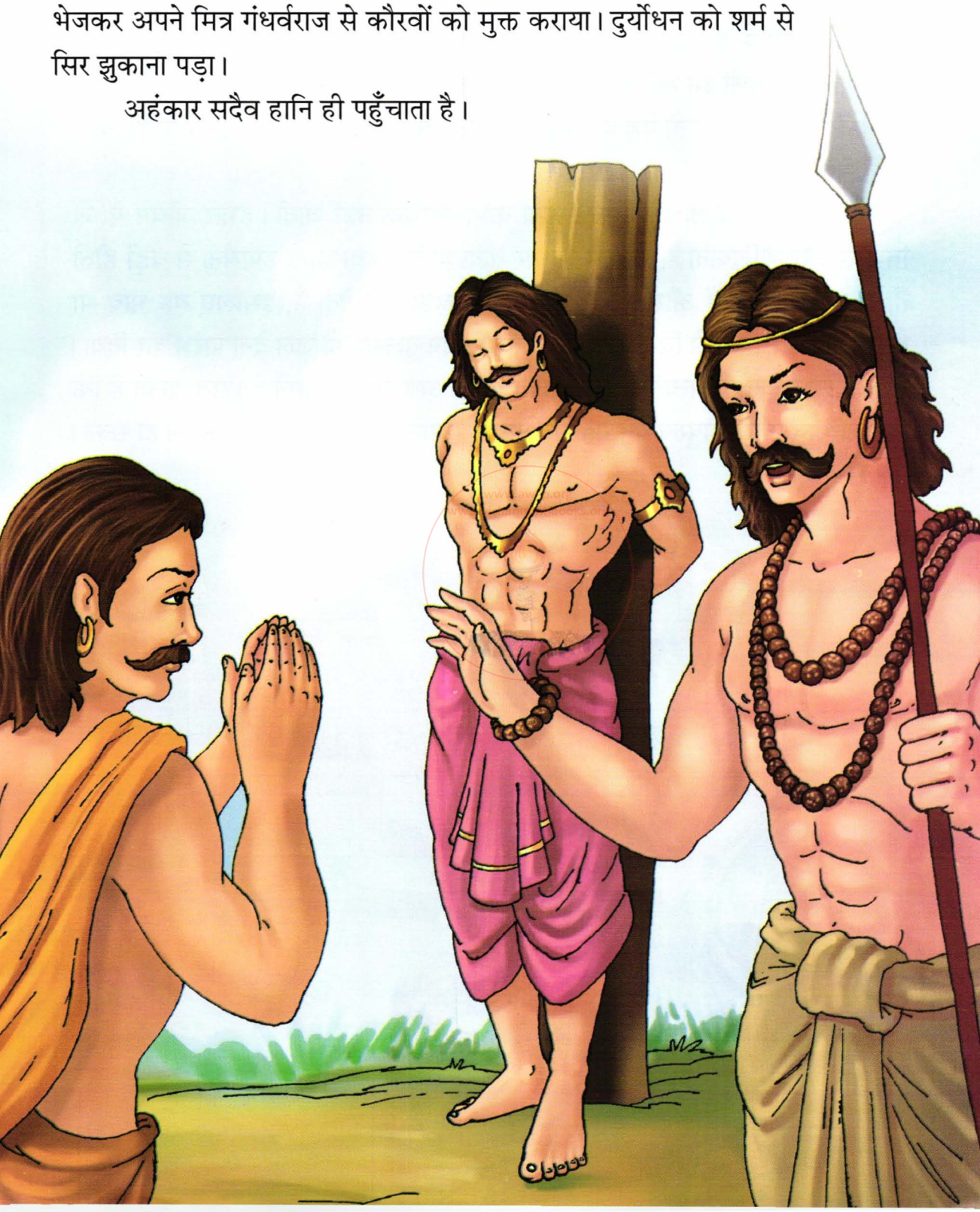

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छोटी श्रद्धा भी महत्त्वपूर्ण

माँ ने कहा—''बच्चे, अब तुम समझदार हो गए हो। स्नान कर लिया करो और प्रतिदिन तुलसी के इस वृक्ष में जल भी चढ़ाया करो। तुलसी की उपासना की हमारी परंपरा बहुत पहले से चली आ रही है।'' बच्चे ने तर्क किया—''माँ तुम कितनी भोली हो। इतना भी नहीं जानतीं कि यह तो पेड़ है ? पेड़ों की भी कहीं पूजा की जाती है ? इसमें समय व्यर्थ खोने से क्या लाभ है ?''

माँ ने कहा—''लाभ है मुन्ने! श्रद्धा कभी निरर्थक नहीं जाती। हमारे जीवन में जो विकास और बौद्धिकता है, उसका आधार श्रद्धा ही है। श्रद्धा छोटी उपासना से बड़ी होती हैं, फलती-फूलती हैं और अंत में जीवन को महान बना देती है, इसलिए यह भाव भी बेकार नहीं है।'' तब से विनोबा भावे जी ने प्रतिदिन तुलसी को जल देना प्रारंभ कर दिया। माँ की शिक्षा कितनी सत्य निकली उसका प्रमाण अब सबके सामने है। सब जानते हैं कि विनोबा भावे एक महापुरुष बने, यह सब उनके बचपन से पड़े संस्कारों के कारण हो सका।

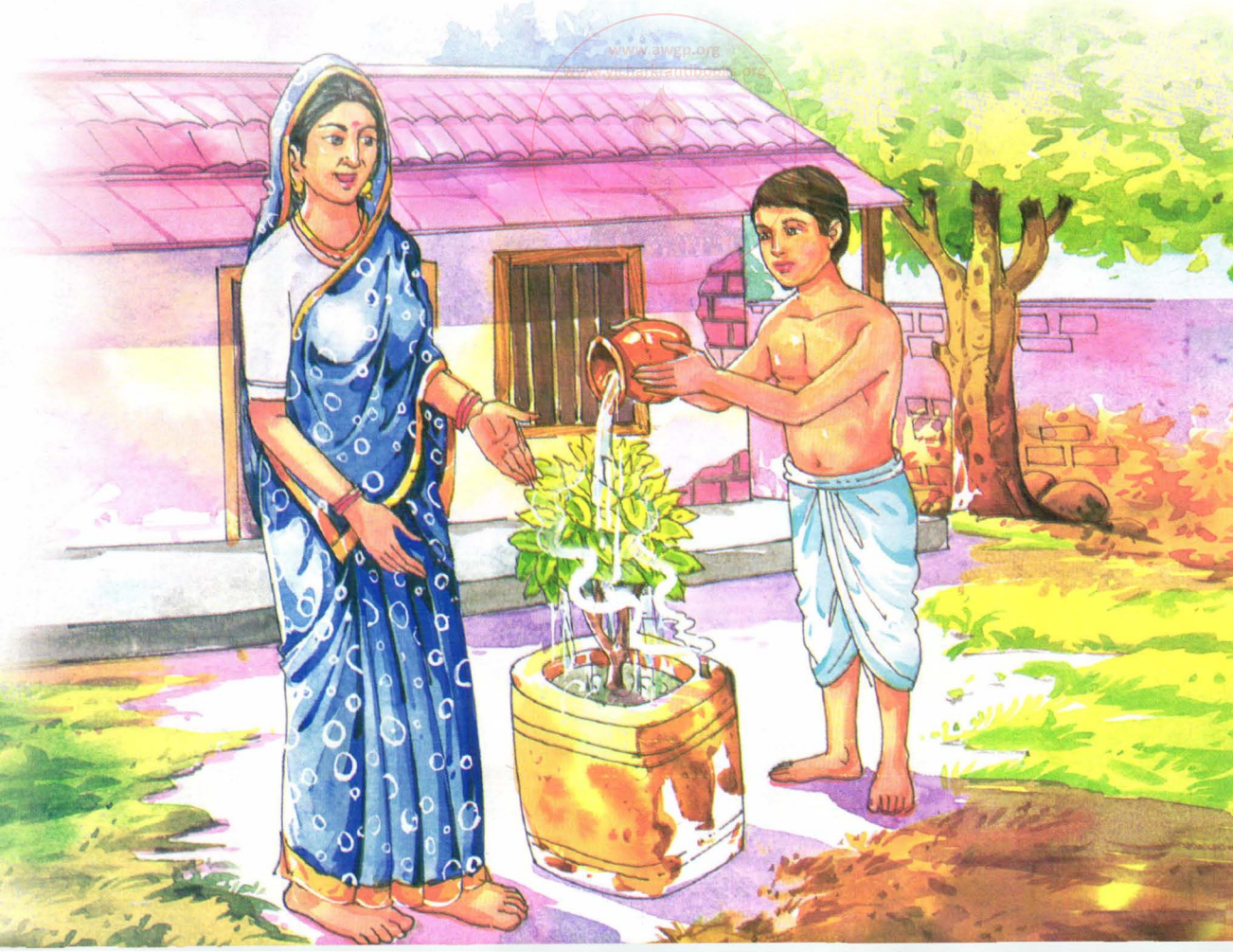

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोकमान्य तिलक की देशभक्ति

लोकमान्य तिलक इंग्लैंड से स्वदेश लौटे। उनके सम्मान में स्वागत-समारोह किया गया। समारोह की समाप्ति पर वे अपनी बग्घी में बैठकर चलने लगे। उनको पहनाई गईं मालाएँ भी बग्घी में रखी गईं। लोकमान्य ने मालाएँ कोचवान को देकर हँसते हुए कहा— "अपने घोड़ों को पहना दो। जैसे ये घोड़े इस बग्घी को खींचते हैं, वैसे ही हम देश की गाड़ी खींचते हैं। दोनों में अंतर कुछ नहीं है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

डॉ० राधाकृष्णन

कॉलेज में पादरी हिंदू धर्म की बुराई किया करते। एक बालक को यह बात सहन न हुई। उसने खड़े होकर पूछा—"महोदय! क्या ईसाई धर्म दूसरे धर्मों की निंदा करना सिखाता है?" पादरी खीझ उठा, उसने कहा—"और क्या हिंदू धर्म दूसरों की प्रशंसा करता है?" बालक ने तटस्थता से उत्तर दिया—"हाँ! हमारा धर्म किसी भी धर्म की बुराई नहीं करता। गीता में हमारे भगवान कृष्ण ने स्वयं कहा है कि किसी भी देवता की उपासना करने से मेरी ही उपासना होती है। अब आप ही बताइए हमारा धर्म दूसरे धर्मों की निंदा कैसे कर सकता है?"

पादरी को उत्तर देते न बना। भारतीय संस्कृति जिसकी रग-रग में बस रही थी, वह बालक दर्शन का प्रकांड विद्वान हुआ। आज हम उन्हें डॉ० राधाकृष्णन के नाम से जानते हैं। वे रूस में भारत के प्रथम राजदूत व बाद में भारत के राष्ट्रपति बने। देवसंस्कृति का प्रकाश उन्होंने सारे विश्व में फैलाया।

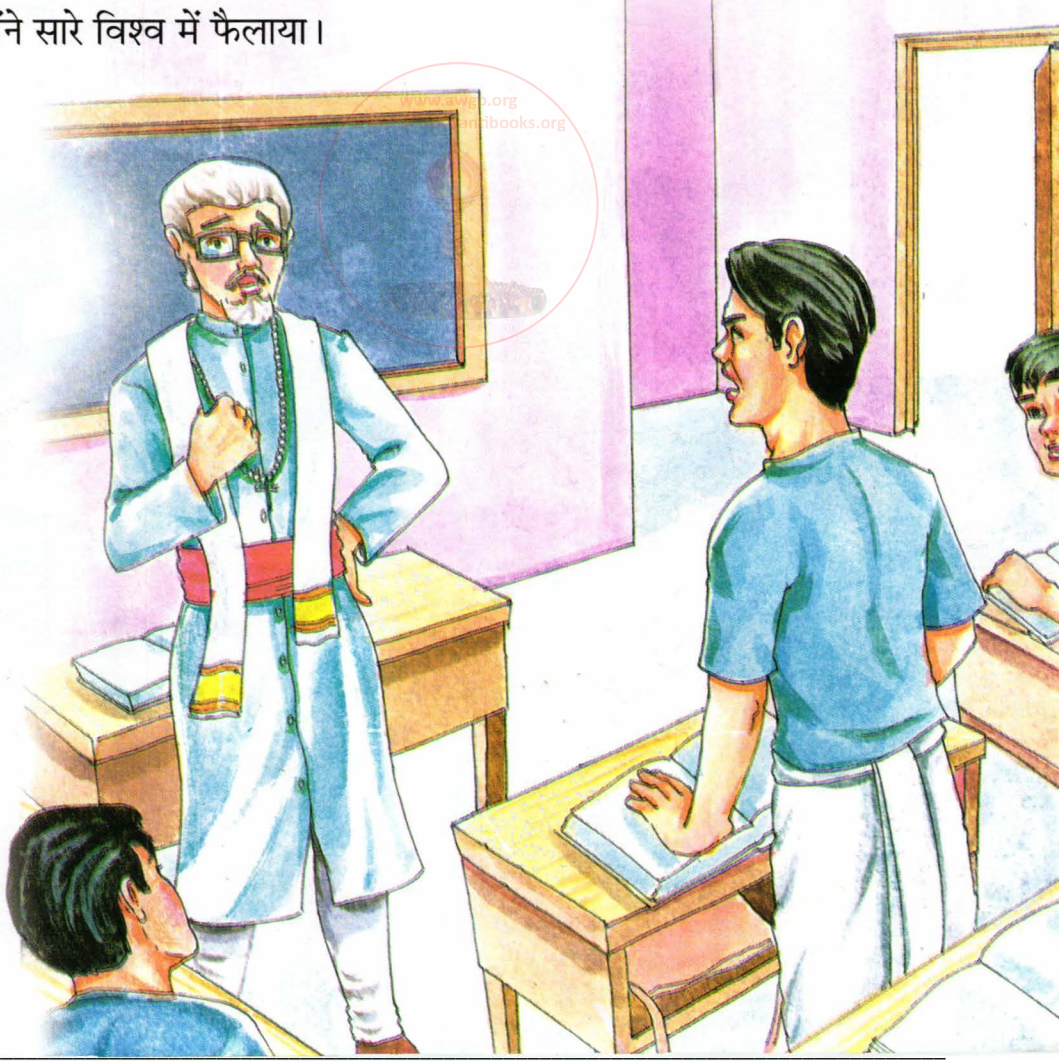

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org